बरन संकल्प मासिक समाचार पत्र

RNI No. : JHAHIN / 2014 / 58757 (स्थापित : 1993) जून 2019, वर्ष–5, अंक–7

सम्पादक एवं प्रकाशक बरन संकल्प
सचिव, बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
बालेश्वर प्रसाद, कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड,
धनबाद–826001, ☎ 9431725382, 7717762093

सह–सम्पादक – डा भुवनेश्वर मोदी, पतरातु
☎ 9431534443

मुद्रक : बिपिन कुमार चौरसिया
प्रेस्त : बिपिन प्रिंटींग प्रेस, कतरास रोड, धनबाद.
☎ (0326) 2308009

स्वामित्व : बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
प्रकाशन स्थान:कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद
826001 (झारखण्ड) E-mail : baransankalp@gmail.com

बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)

अध्यक्ष : कृष्णचंद्र अशान्त, शिव मंदिर चौक, न्यू कॉलोनी, जगजीवन नगर, धनबाद
☎ 2200243, 9934341558

उपाध्यक्ष : विमल कुमार बरनवाल, खमरिया, (भदोही)
☎ 9794862972, 9415865614

कोषाध्यक्ष : बिशेश्वर प्रसाद, MIG/B-18, हाउसिंग कॉलोनी, धनबाद, मो0 नं0 – 7294032449

विषय सूची

			पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	बालेश्वर प्रसाद	2–3
2.	बेचैन जिन्दगी	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	4–8
3.	यात्रा		8–9
4.	दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव	प्रकाश चन्द्र बरनवाल	10
5.	मुखौटा	सीमा प्रकाश	11–14
6.	प्रिसाइडिंग ऑफिसर की डायरी	चितरंजन भारती	15–23
7.	प्रभू स्वीकार है हमको तर्ज बहरों फूल बरसाओ	सुमद्रा गुप्ता बरनवाल	24
8.	अभिनन्दन तेरा अभिनन्दन	मोहन प्रसाद बरनवाल	24
9.	वर–वधू		25–29
10.	देश गौरव सुभाषचंद्र बोस		31–35
11.	हेल्दी रेसिपी		36

वरन संकल्प न्यास के न्यासी परिषद के अन्य सदस्य

श्री अनन्त नारायण लाल, धनबाद – 9431377604, श्री पी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431187661, श्री विष्णु प्र0 गुप्ता, झरिया – 9431162609, श्री बी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431315440, श्री सुनील कश्यप, धनबाद – 9431125696, श्री अमरेन्द्र नारायण, धनबाद – 9835553936, डा0 महेन्द्र प्रसाद, धनबाद – 9431730154, श्री मधुकर प्रसाद, धनबाद – 9334014556, श्री सदानन्द प्र0 बरनवाल, जैना मोड़ – 9430756496, श्री जगदेव प्र0 बरनवाल, जमशेदपुर – 0657–2290174, श्री राधेश जी बरनवाल, मिर्जापुर – 9936119805, श्री ओमनन्दन प्रसाद, धनबाद – 9431191440, श्री अजित कुमार बरनवाल, आसनसोल – 9002726608, श्री महेश्वर मोदी – 9572112499, श्री साधुशरण प्रसाद, 9470570757

शुल्क "बरन संकल्प" के 01910100925352, UCO Bank, IFSC - UCBA0000191 के A/c में जमा करें।

न्यासी शुल्क 1200/–

प्रकाशित सभी लेखों एवं नकल कर भेजे गये रचनाओं का उत्तरदायित्व रचयिताओं का है। सभी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र धनबाद होगा। 'बरन–संकल्प' में प्रकाशित रचनाओं के विचार संबंधित रचनाकारों के है, 'बरन–संकल्प' के नहीं –सम्पादक

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

लोकतंत्र भारत के चौकीदार ने सफलता का सोपान आसमान तक खड़ा किया। जिसने देश–सेवक चौकीदार को चोर कहा वह औंधे मुँह गिरा। उत्तर भारत से मैदान छोड़कर भागने वाला अपने बड़बोलेपन के कारण कॉंग्रेस को उबार नहीं सका। उसका गठबंधन तो हो नहीं पाया। महागठबंधन वाले सचमुच महाठगबंधन वाले साबित हुए। अबकी बार तीन सौ के पार की भविष्य वाणी बिल्कुल सच साबित हुई।

लगभग ढ़ाई महीने की रस्सकाशी के बाद लोकतंत्र के खेल का अर्थात् 17वीं लोकसभा चुनाव का परिणाम विगत 23 मई को घोषित होते ही अंततः शान्तिपूर्वक पटाक्षेप हो गया। बेचारी कॉंग्रेस देश की महारानी साबित नहीं हो सकी और उसकी स्थिति पूर्ववत् पाँव पलोटन दासी ही साबित हुई। विडंबना तो देखिए कि जो अखिलेश और मायावती को हाथों हाथ उठाये हुए थे, उनदोनों ने भिखारी जैसा मात्र दया करके दो ही सीट दिए जिनमें से एक भाजपा (स्मृति इरानी) झपटकर रख ली। अगर भागकर बेचारे वायनाड में शरण न लेते तो शायद उन्हें माताश्री भी ऊँगली पकड़कर गड्ढे से बाहर नहीं निकाल पाती। माताजी अपनी प्रतिष्ठा बचा भी पायीं तो बेटी की ही कृपा से। गिरिराज सिंह का यह वक्तव्य कि प्रियंका वाड्रा अपने रुप से मतदाताओं को नहीं लुभा सकती। उनके जैसा देश में हजारों महिलायें राजनीति कर सकती हैं। कॉंग्रेस के उन्हें महासचिव बना लेने से कॉंग्रेस की नैया पार लगने वाली नहीं है, बिल्कुल सच साबित हुआ।

मात्र भाजपा के संबंध में विगत 19 तारीख को TNVMR का एक्जिट पोल सबसे अधिक सच साबित हुआं उसकी भविष्यवाणी ने जिसमें मतदाताओं के मन में एक उत्सुकता जगा दी थी, बिल्कुल सटीक देखने को मिला। 'मोदी' महाविजेता बने। उनकी और अमित शाह की जोड़ी ने देश को दिखा दिया कि 1984 के जिस लोकसभा चुनाव में भाजपा सिमटकर दो ही स्थान ले पायी थी, आज इन दोनों के कुशल नेतृत्व ने इसे साढ़े तीन सौ तक पहुँचा दिया। यह आँकड़ा एनडीए का है, फिर भी अकेले भाजपा 303 सीट पर 54.04% मत लेकर कब्जा जमा लेगी, इसका अनुमान इसके नेताओं को भी नहीं रहा होगा। ऐसी सफलता इन्दिरा गाँधी को 1971 के आम चुनाव में मिली थी जब उन्होंने बाँगलादेश को पाकिस्तान के चंगुल से मुक्त किया था। आज उसी स्थान को 'मोदी' जी ने प्राप्त किया है। तब कॉंग्रेस ने नारा दिया था – इन्दिरा ही भारत और भारत ही इन्दिरा है। और आज भाजपा कह रही है कि मोदी है तो सब कुछ मुमकिन है। दोनों बातें एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पर इन्दिरा गाँधी ने उस जीत का पुरस्कार देश में इमर्जेन्सी के रुप दिया, पर मोदी जी देश को विकास, सुरक्षा और स्वावलम्बन के रुप में देने जा रहे हैं। चाय बेचने वाला चौकीदार बनकर सचमुच अपने आप को फकीर बना लिया जिसके पास देश सेवा का व्रत है और अब लक्ष्य यहाँ तक पहुँच गया है कि सबका साथ + सबका विकास + सबका विश्वास = विजय।

इस महाचुनाव में कई बातें उभर कर देशवासियों के सामने आयीं –

1. देश 16 राज्यों में कॉंग्रेस को कहीं जगह नहीं मिली। सत्ता के लिए लार टपकाती रही।

Scanned by CamScanner

2. राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में काँग्रेस ताड़ से गिरकर खजूर पर अटक गई।

3. कर्नाटक में चारों खाने चित्त गिरी।

4. बंगाल में ममता दीदी जिस मुँह से मोदी जी को मुँह पर थप्पड़ मारने, जेल में ठूँसने और गुन्डा कहती फिर रही थी, इस परिणाम से उनके पेट में माछ–मात ठीक से पच रहा होगा कि नहीं। कहीं चिन्ता से उनकी नींद हराम तो नहीं हो रही होगी। क्योंकि दीदी के हाथ से 18 सीट निकल चुके हैं और 2022 का चुनाव अब आने के पूर्व ही उन्हीं की कुर्सी उन्हें काँटी चुभा रही होगी।

5. सात राज्यों में काँग्रेस दो से तीन सीट तक नहीं पहुँच सकी।

6. बिहार में 'राजद', हम और रालोसपा का पूर्ण रुपेण सफाया हो गया। वहाँ उपेन्द्र कुशवाहा के सड़क पर खून बहाने की धमकी ऊपर ही ऊपर हवा हो गई।

7. अथक परिश्रम के बावजूद 2014 के पाँच वर्ष के अन्तराल में राहुल मात्र सात सीट ही कमा सके। विकाशवाद के आगे वंशवाद फेल हो गया।

8. व्यक्तिवाद, जातिवाद के आगे राष्ट्रवाद का झण्डा बुलंद हुआ।

9. गरीब, दलित, उपेक्षित जनता, मुस्लिम महिलाओं में विश्वास और भरोसा जगा और मोदी जी का उत्तरदायित्व बढ़ गया।

10. मोदी लहर में लगभग हर विरोधी दल के दिग्गज के पाँव उखड़ गए। जनता उन्हें धोखेबाज समझकर दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दी।

11. पुलवामा पर सैनिकों के शहादत और बालाकोट पर एयर स्ट्राइक की खिल्ली उड़ाना और उस पर राजनीतिक करना विरोधियों के लिए भारी साबित हुआ।

ऐसे में अब मोदी जी का परम कर्तव्य बन जाता है कि विगत पाँच वर्ष की अधूरी योजनाओं का भावी पाँच वर्ष में पूरा करें। मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक से मुक्ति दिलावें, रामजन्म भूमि मंदिर पर सार्थक निर्णय लें और हिन्दू जनता के मन में विश्वास पैदा करें। बेरोजगार शिक्षित युवकों को अधिक से अधिक रोजगार मुहैया करावें। किसानों को ऋण ग्रस्तता से मुक्ति दिलावें। प्रशासनिक स्तर पर हर राज्य को चुस्त दुरुस्त रखें। इसी के साथ 'बरन संकल्प' परिवार की ओर से कोटि– कोटि बधाई।

और अन्त में उनकी परम पूज्य माँ जो अब सचमुच भारत माता कहलाने की अधिकारिणी हैं, उन्हें भी 'बरन संकल्प' परिवार की ओर से शत–शत नमन।

जय हिन्द । वन्दे मातरम् ।

बालेश्वर प्रसाद, सम्पादक

नया इन्सान चाहिये

इस देश के खातिर नया इन्सान चाहिये
इसाई न सिक्ख हिन्दु न मुसलमान चाहिये
समृद्धियाँ बढ़े सदा अपने स्वदेश की
सिर गर्व सये उन्नत हो ऐसी आन चाहिये।
दारिद्र छुवा–छूत मिटाने की लें शपथ
नागरिक हो सभी ऐसे न भगवान चाहिय
कर्त्तव्य पथ पे अग्रसर हो देश के युवक
अपने वतन पर मिटने का अरमान चाहिये।
दिखाये न कोई आँख भारत की जमीं को
सन्नद्ध हो सीमा पे नौजवान चाहिये
आये जो कोई आपदा इस मुल्क में कभी
सब कुछ लुटा दें ऐसे मेहरबान चाहिये।
अन्याय अत्याचार का नामों निशाँ न हो
सारे विश्व में अनोखा हिन्दुस्तान चाहिये
घुसपैठ और आतंक को बढ़ने न दे यहाँ
दुश्मन के लिये नीत का सामान चाहिये।
दिल खोल के मिलें सभी दीवानी व ईद में
क्रिसमस व गुरुपर्व एक समान चाहिये
छोटे बड़े का फर्क करे कोई न अब कहीं
कानून में एक ऐसा प्रावधान चाहिये।

मोहन प्रसाद बरनवाल

Scanned by CamScanner

बेचैन जिन्दगी

भाग – 17

इस उपन्यास के भाग 16 में मेरा अधिकतर फोकस पारिवारिक जीवन में बच्चों के प्रति माता–पिता का कर्त्तव्य, सास–बहू के बीच कटुता का कारण और पर घर गई बेटी के प्रति भी माता–पिता के स्नेह और वात्सल्य भाव के साथ–साथ कुँवारी लड़की और जवान बेटों का समय पर वैवाहिक जीवन में बाँधकर माता–पिता के धर्म का पालन करने के रहा। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ के लड़के–लड़कियाँ अगर पढ़ाई–लिखाई में समय का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हो वहाँ माता–पिता का दायित्व एवं धर्म होता है कि उनकी उम्र का ख्याल कर उन्हें समय पर वैवाहिक संबंध में बाँधकर सामाजिक व्यभिचार से बचाकर रखें। परिवार, समाज और देश हित में ऐसा करना आज के युग में जरुरी है। अब आगे देखिए क्या होता है?

उस दिन छत पर निर्मला को नसीहत देने के बाद त्रिभुवन बाबू देर रात निर्मला की ही बात पर तर्क– वितर्क करते रहे। उन्हें इस बात की तकलीफ हो रही थी कि उर्मिला और विनोद का विवाह क्या मैंने असामयिक कर अपने अभिभायकत्व का अनुचित कार्य किया एवं अपनी बात पर अब भी दृढ़ थे कि भले ही समय से कुछ पूर्व उन्होंने जरुर ऐसा किया, पर उन दोनों भाई–बहनों के प्रति कम से कम अधर्म तो नहीं किया। आज अगर इनके पिता होते तो शायद मैं यहाँ न होता या होता भी तो उत्तरदायित्वहीन जिन्दगी गुजारता। पर समाज में जिस तरह की बुराई फैल रही है और जवान बेटी–बेटियों की इस फैशन के युग में जिन्दगी बर्बाद हो रही है, ऐसे में मेरा उठाया गया कदम उचित भले न हो, पर अन्यायपूर्ण नहीं होना चाहिए। दूसरे दिन उन्होंने निर्मला से कहा – ''निर्मला तुम आज ही नारायणपुर चली जाओ और उर्मिला का समाचार लाकर दो। तुम माँ हो और बेटी को जब तक अपनी आँख से नहीं देख लोगी, तुम्हें न तो संतोष होगा और न ही मुझे चैन मिलेगा। उसी दिन उल्टी बेला में निर्मला बेटी से मिलने नारायणपुर चली गई। वहाँ उसने देखा – इन दो वर्षो में उर्मिला की देह में भले ही कुछ दुर्बलता दीखा पड़ी पर उदर में हल्का–हल्का उभार देखा। पूछने पर बतायी कि उसके पति उसे डॉक्टर से चेककप कराकर ले आए हैं। विटामिन की चीजें और जूस वगैरह लेने बोले हैं। सुबह–शाम भोजन कुछ हल्का लेने और घर के काम–काज में सावधानी बरतने बोले हैं। घर आकर निर्मला ने त्रिभुवन बाबू को जब पूरा समाचार बेटी का सुनाया तो उन्हें संतोष हुआ। अब निर्मला की कोई शिकायत उनके प्रति नहीं रही। इधर उर्मिला के दिन पूरे होते–होते श्यामली भी माँ बनने के दरवाजे पर कदम रखी। इस पर त्रिभुवन बाबू ने चुटकी लेते हुए निर्मला से कहा – लो निर्मला अब तेरा प्रोमोशन हो गया। पहले माँ थी, फिर बहू और दामाद की सास बनी और अब नानी– दादी बनोगी। भगवान का कितना आशीर्वाद तुम्हें मिल रहा है। इस पर निर्मला बोली – सो तो है फूफा पर इसमें आपकी कृपा भी कम नहीं है। पर मैं एक समाचार जो लायी थी उसे मैंने आपको उस दिन ही बतायी थी। इस पर अभी तक आप कोई उत्तर क्यों नहीं दे रहे हैं ? बीच–बीच में भी मैं आपको याद कराती रही, आप हैं कि अपना मौन तोड़ने का नाम ले ही नहीं रहे हैं। एक ओर आप सत्संग करते हैं, सुबह–शाम प्रार्थना करते हैं, धार्मिक किताबें पढ़ते हैं, हमें भी गुरु दीक्षा लेने को प्रेरित करते रहते हैं, पर व्यवहार में आप स्वयं दूर रह रहे हैं। यह आपका कैसा सत्संग और धार्मिक विचार है ? निर्मला के इस कथन से त्रिभुवन साहू तिलमिला गए।

अंततः उन्हें मौन तोड़ना पड़ा। उन्होंने कहना शुरु किया – ''तुम बार–बार फूआ को अपना घर ले आना चाहती हो और इसी के लिए मुझ पर दबाव बना रही हो। पर इतना अवश्य समझ लो कि उसके आते ही तेरे घर में अशान्ति आ जायेगी। फिर गृह–कलह छिड़ेगा और तुम ही बदनाम होओगी। शान्ति से जो

Scanned by CamScanner

दो कोर मुझे सुबह-शाम रोटी दे रही हो, उस पर विराम लग जायेगा। और, अन्ततः यह होगा कि मुझे तुम्हारा घर सदा-सर्वदा के लिए त्याग कर देना पड़ेगा। फिर ऐसा भी होगा कि तुम्हें अपने ही बेटे-बहू से विवाद न हो जाय। किसी का भार उठाना आसान है; पर निर्वाह करना बहुत कठिन। मेरा अभी पूर्णतः बुढ़ापा नहीं आया है। मैं भगवान से प्रतिदिन यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे लाठी पकड़ने या खाट धरने के पूर्वही भगवान इस दुनिया से ले चले ताकि तुमलोगों को मेरी त्याज्य गंदगी से नाक-भौं न सिकुड़ना पड़े। पता नहीं मेरी प्रार्थना भगवान या श्री श्री ठाकुर को स्वीकार होती है या नहीं।

इस पर निर्मला बोली – ''फूफा ! फूआ तो अपने किये का दण्ड भोग रही हैं। मैंने जब उसे फूसरो के बस स्टैण्ड पर भीख माँगते देखा तो पहले मैं उसे पहचान ही नहीं पाई। उसके ऊपर-नीचे के दो-दो दाँत टूट चुके हैं, आँखे धँस गई हैं, गाल चिपक गये हैं, बाल में इतनी धूल पड़ी मिली कि पता नहीं उसे नहाने के लिए पानी मिलता है या नहीं। कमर झुक चुकी हैं और एक लकड़ी टुकड़े के सहारे ही खड़ा हो पाती है। देह पर का वस्त्र मैला-कुचैला और फट कर गुदड़ी हो चुका था। देखकर मुझे इतनी तरस आयी कि मन ने कहा कि उसे लेकर अभी लौट चलूँ। पर बिना आपसे अनुमति लिए मैं उसे ला भी नहीं सकती थी। पता नहीं उस पर मुझे इतनी तरस क्यों आरही है ? अब भी मैं आपसे विनती करती हूँ कि अपना दुराग्रह छोड़कर उसे मुझे मँगा देने का आदेश दीजिए। अथवा मैं खुद जाकर ले आती हूँ, केवल आप आज्ञा दीजिए। वह अपने किये का दण्ड भोग चुकी है। अगर अब भी वह नहीं समझी तो मैं उसे बिना आपसे कुछ कहे घर से निकाल दूँगी। अब तो आपको कुछ कहना नहीं है। आपके आये यहाँ लगभग दस वर्ष हो चले। क्या एक बार भी किसी ने आपसे अपमानजनक बात कही है ? सभी आपसे घर का मालिक जैसा बर्त्ताव कर रहे हैं। मेरी बहू भी अब आपसे घुल-मिल गई है। इसलिए किसी पर संदेह करना भी तो आपकी भूल होगी।''

इतनी बातें सुनने के बाद त्रिभुवन साहू बोले, ''निर्मला ! मैंने तेरी सारी बातें सुन ली। मेरी भी एक शर्त्त है। उसे मेरे पास या मेरे कमरे में नहीं लाना होगा। क्योंकि जहाँ उसके साथ मेरी बातचीत हुई, वह पेंशन आदि का हिसाब माँगने लगेगी। फिर इतने दिन की आमदनी खर्च या जमा आदि का हिसाब सुनना चाहेगी। फिर तो सुबह-शाम किचकिच शुरु हो जायगा। ऐसे में जब बातें बर्दाश्त से बाहर हो जायेंगी तो मैं तेरा घर छोड़ने को बाध्य हो जाऊँगा। अस्तु तुम्हें वचन देना पड़ेगा कि उसे तुम अलग कमरे में खाने-पीने और रहने की व्यवस्था करोगी। उसे सिर्फ पेट से ही नाता रखना पड़ेगा, और बातों से नहीं।

सुनकर निर्मला ने वचन दिया – ''आप जैसा चाहेंगे, वैसा ही होगा। मैं आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं करुँगी।'' इसके बाद निर्मला दूसरे दिन फूफा के पासबुक से सोनमती देवी का फोटो दिखाते हुए विनोद से बोली – ''बेटा ! इस फोटो को देख रहे हो। यही मेरी फूआ का फोटो है। इसको ध्यान से देख लो। इसके बाद तुम कल ही फूसरो बस स्टैण्ड या रेलवे स्टेशन चले जाओ। वहाँ देखना इसी चेहरे से मिलती-जुलती एक बुढ़िया मिलेगी। उसके ऊपर-नीचे के दो-दो दाँत टूटे मिलेंगे। भीख माँगती वह बुढ़िया मेरी फूआ है। उसका नाम सोनमती देवी है। तुम नाम-पता पूछकर जान लेना और चला आना। तुम्हें अपना परिचय देने की जरुरत नहीं है। जब तुम आ जाओगे तो जाकर मैं उसे ले आऊँगी।'' विनोद ने माँ के आदेश का पालन करते हुए फूसरो जाकर ढूँढ़ निकाला। बूढ़ी रेलवे प्लेटफार्म पर पड़ी मिली। देह पर मक्खी भिनभिना रही थी और आने-जाने वालों से दया की भीख माँग रही थी। विनोद ने जब उस नानी का सारा हाल सुनाया तो दूसरे ही दिन निर्मला उसे लाने को तैयार हो गई। पर जब चलने लगी तो त्रिभुवन बाबू ने उसे थोड़ा आक्रोश में आकर कहा – ''निर्मला तुम उसे लाने तो चली जा रही हो। पर मेरा सख्त आदेश है कि तुम उसेउसकी मोटरी गठरी के साथ भिखारिन जैसा ही मेरे पास लाना। मैं उसे दूर से ही

Scanned by CamScanner

देखूँगा और गौतम ऋषि जैसा अपने पास स्थान तब तक नहीं दूँगा जब तक जिन्दा रहूँगा। शेष जिम्मेवारी तेरी है।'' ठीक है, मैं वैसा ही करूँगी, अब तो आप खुश है न, कहकर निर्मला चल दी।''

निर्मला सीधे चलकर फूसरो प्लेटफार्म पर जा पहुँची। विनोद ने जैसा सुनाया था, वैसी ही बूढ़ी मिली, बिल्कुल मरणासन्न। निर्मला ने उसे संभाला और साथ में चलने को कहा – ''चलो फूआ ! मेरे साथ मेरा घर। पहले तो सोनमती देवी को विश्वास ही नहीं हुआ। भला अचानक उसका भाग्य कैसे पलट गया। पर बार-बार आग्रह-अनुरोध करने और हाथ पकड़कर उठाने पर वह चलने को तैयार हुई। उसके सारे गन्दे कपड़े एक बोरी में ठूँसी और उस डण्डे का सहारा देकर जब निर्मला सोनमती देवी को लेकर चली तो बीसो-पच्चीस आदमी टकटकी लगाकर बहुत देर तक देखते रहे। उसे एक टेम्पू पर बिठाकर बस-स्टैण्ड ले आयी, फिर उसे बस पर चढ़ाकर गाँव के समीप उतारी और फिर वहाँ से धीरे-धीरे किसी तरह सहारा देकर दरवाजे पर ले आयी। रास्ते में उसे समझाती हुई आयी।'' फूफा मेरे ही घर में अपना घर छोड़ने के दिन से सकुशल हैं। वह तो हम सबों की नजर से बहुत दूर न जाने कहाँ चले जाते, पर मैंने उन्हें पूरे विश्वास के साथ कसम खाकर विश्वास दिलाया, तभी ये मेरे पास आकर रह रहे हैं। पर अब तुम्हें हिदायत दे रही हूँ कि तुम उन्हें मत छेड़ना और चुपचाप जो दूँ उसे खाना, जहाँ रखूँ जैसे रखूँ, तुम्हें रहना होगा। वर्ना अगर मेरे घर में किसी भी प्रकार का झगड़ा की तो घर से निकाल दूँगी। तुम्हें मैं अपनी मर्जी से लेने आयी हूँ। फूफा तो नहीं चाहते थे। उस दिन तुमने जितनी बातें सुनायी, सब कुछ फूफा को मैंने जानकारी दे दी है। तेरा आभूषण तो बिक ही गए। घर बिकते-बिकते बचा है। दोनों बेटे और दोनों बेटियाँ भी तेरे नहीं हुए। ये सारी बातें मैं उन्हें बता चुकी हूँ। ऐसे में फूफा अगर कुछ कहें भी तो तुम्हें सुनकर चुपचाप रहना है, मुँह नहीं लगाना है। जहाँ तुम मुँह लगायी, वहीं से झगड़ा शुरु हो जाएगा। तुम्हें उनके पेंशन-पैसे का भी हिसाब-किताब नहीं लेना है, समझी।'' सुनकर सोनमती देवी बोली – ''न बेटी न अब और न। मुझे मलकिनी नहीं बनना है। जैसा तुम कहोगी, वैसा ही करूँगी। अब तेरे ही दरवाजे का आसरा है। अब इस मरण काल में किस पर भरोसा करूँगी। उनका देख लूँ यही मेरा सबसे भाग्य है। भगवान ने मेरे आँसू पोंछ दिए यही कम नहीं है। तुम सदा सुखी रहो, यही तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ। ये ही बातें करते-करते दोनों ने आँगन में कदम रखे।

उस समय त्रिभुवन बाबू आँगन में ही कुर्सीपर बैठे समाचार-पत्र देख रहे थे। आते ही निर्मला बोली – ''देख लीजिए फूफा ! फूआ की दुर्दशा। इस हालत में भी क्या इस पर मुझे दया नहीं आनी चाहिए थी ?'' इस पर त्रिभुवन बाबू कुछ नहीं बोले। पलके उठाकर एक पल के लिए निहारा और नजरें झुका लीं। आने के साथ ही सोनमती देवी धड़ाम से उनके पैर पर जा गिरी और पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगी।'' मुझे माफ कीजिए। मैं बहुत बड़ी पापिन हूँ, मुझे माफ कीजिए। मैंने आपका बहुत बड़ा गुनाह किया है। भगवान ने मुझे उसी का दण्ड दिया।'' पर त्रिभुवन बाबू का कलेजा तनिक नहीं पिघला। उन्होंने धीरे से दोनों पैर ऊपर खींच लिये और मौन बने रहे। फिर निर्मला ने ही उसे उठायी और सहारा देकर बाथरुम में ले गई। उसके सारे कपड़े उतरवाकर घंटे भर मल-मलकर साबुन से नहलायी। फिर बक्से से निकाल कर नयी साड़ी पेटीकोट और ब्लाउज पहनायी। इसके बाद अलग कमरे में खाट बिछाकर वहीं लिटा दी। खाना भी ले जाकर वहीं खिलायी। फिर कुछ देर के बाद माथे में तेल डालकर मल-मलकर सारे बदन में भी लगा दी। बाल झाड़कर माँग में सिन्दूर दे दी और पकड़कर एक माची पर लाकर आँगन में कुछ देर के लिए बैठा दी। इस बार त्रिभुवन बाबू ने अपनी बूढ़ी को बहुत गौर से देखा और मन ही मन निर्मला की सेवा की सराहना की। ''धन्य हो निर्मला ! तेरी सेवा धन्य है। इसी को कहते हैं मानव सेवा।''

Scanned by CamScanner

फिर उठकर अपने कमरे में जा बैठे। निर्मला ने जब ओसारे में बैठकर उन्हें भोजन करने को कहा तो उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा – ''अब मेरे लिए यहीं भोजन ला दिया करो। अब मैं ओसारे में भोजन नहीं किया करूँगा।'' इस पर निर्मला कुछ न बोली और उस दिन से उनके लिए उनके शयन कक्ष में ही तीनों समय का भोजन, नाश्ता, चाय–पानी आ जाय। उन्हें इसके लिए ओसारा या आँगन में बैठने की जरुरत न पड़े। मन ऊब जाय तो वे छत पर चले जाएँ और वहीं समय काटा करे। आते–जाते सोनमती देवी उन्हें ललचायी नजरों से देखे, शायद उनका दिल पसीज जाय और बात करें, पर त्रिभुवन बाबू अपनी जिद्द से झुकने वाले नहीं निकले। इसी तरह करते तीन महीने गुजर गए। एक तरह से उन्होंने उस दिन से निर्मला का अभिभावकत्व छोड़ ही दिया। अपने मन को इस प्रकार नियंत्रित कर लिए जैसे कछुआ खतरे को भाँफ कर अपने सारे अंग को समेट लेता है। निर्मला के घर त्रिभुवन बाबू एक तरह से अब पेइंग गेस्ट की तरह रहने लगे और सोनमती देवी जो उठकर खड़ा नहीं हो पाती थी, यहाँ का सुख और निर्मला की सेवा पाकर बाहर–भीतर चलने–फिरने लगी। पर उसे त्रिभुवन साहू के कक्ष में घुसने की कभी हिम्मत न हो।

सोनमती देवी के सिर में कितने जूएँ भरे होंगे, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। निर्मला ने उन्हें झाड़–झाड़कर और चुन–चुनकर बहुत निकालने की कोशिश की, फिर भी वे समूल नष्ट नहीं हुए। अन्ततः उसे दुकान से विनोद द्वारा दवाई मंगानी पड़ी और माथे में डालने के बादही दूर कर पायी। भला इतनी सेवा बूढ़ी को कौन देने वाला होगा ? ऐसे ही दिन बितते चले जा रहे थे। बरसात आयी और गुजर गई। इस बीच निर्मला की बहू भी गर्भवती हो गई। अब निर्मला पर काम के बोझ बढ़ गए। इधर बहू घर का पूरा काम न कर पाए और उ पर दो बूढ़े–बूढ़ी की सेवा, गाय–बैल और बछड़े, बकरी आदि की देखभाल, खेती– गृहस्थी भी अलग से। दुर्गापूजा आते–आते खबर आई कि उर्मिला एक बच्चे की माँ बन गई। वह अगहन में ही मैके आना चाह रही है। काम के बोझ ने निर्मला की चैन छीन ली। दिनभर के काम से उसे दम मारने की फूर्सत ही न मिले। पर करे भी तो क्या ? दीपावली, छठ सब गुजर गए। ममता में आकर उसने उर्मिला को बुला लिया। अब उसके बच्चे को भी संभालने की चिन्ता हुई। माँ की परेशानी देख उर्मिला भाभी के काम में मदद करने लगी। साथ ही शाम को नाना–नानी के लिए आग वगैरह की व्यवस्था कर देती। जाड़े में सबों को गरम पानी से नहाने की जरुरत पड़ी तो एक अलग से गैस का चूल्हा मंगा लिया गया। उर्मिला को फूर्सत मिले इसलिए त्रिभुवन बाबू कभी–कभी बच्चे को गोद में लेकर छत पर चले जाएं। कभी खटोले पर बूढ़ी नानी ही थोड़ा बहुत लोरी सुना दें। इस तरह संयुक्त परिवार में दिन कटने लगे।

अगहन में मजदूरों की सहायता से ही धन कटनी आदि से निपटकर घर में अनाज भर दिया गया। पूस बीतने के बाद कुछ राहत की साँस ली तो फाल्गुन में श्यामली एक बच्ची की माँ बन गई। होली के बाद उर्मिला की बिदाई हो गई। इस तरह उर्मिला और श्यामली के बच्चों को पाकर निर्मला की परेशानी भले ही बढ़ गई थी, पर उसके नानी–दादी बन जाने पर त्रिभुवन बाबू को एक दिन चुटकी लेने का मौका मिल गया। छत पर बैठे थे। शाम का समय था। विनोद की बेटी रो रही थी। निर्मला उसे लेकर छत पर जा चढ़ी। गोदी में उसे देखकर त्रिभुवन बाबू ने हँसकर निर्मला से कहा – बेटी तेरा अब प्रोमोशन हो गया। पहले तुम बेटी थी। फिर पत्नी बनी। फिर पाँच बच्चों की माँ बनी। फिर सास बनी और अब नानी–दादी बन गई। देखो तो तेरा प्रमोशन ही प्रमोशन। इस पर निर्मला ठहाका मारकर हँस दी। उसे सुनकर बड़ी खुशी हुई। लगभग सात–आठ महीने के बाद फूफा की गंभीरता आज टूटी थी। तभी उसे एक चिल्लाहट सुनाई दी .... बेटी बचाओ, मैं मरी.....। निर्मला तेजी से बच्ची को फूफा की गोद में सौंपकर नीचे उतरी तो देखती है कि फूआ सीढ़ी पर गिरकर छटपटा रही है। उसे उठा पुठाकर आँगन में खाट पर सुला दी, फिर डाँटते हुए बोली –

Scanned by CamScanner

"देह में ताकत नहीं है तो जबर्दस्ती क्यों करती है ?" इस पर फूआ बोली – "तुम्हें ऊपर देख मुझे भी ऊपर जाने की इच्छा जगी, पर दो सीढ़ी चढ़ते ही चक्कर आ गया।" तुम मुझे बुला लेती, मैं ऊपर ले जाती। अब ऐसा नहीं करना, वर्ना हाथ-पैर टूट जाएगा तो मुझे ही ढोना पड़ेगा". डाँटकर निर्मला ने उसे चुप कराया और फिर ऊपर जाकर फूआ को बतियाने लगी। बेचारी बूढ़ी आँख में आँसू भरकर बार-बार भगवान से विनती करने लगी – "हे भगवान ! मुझे अब भी ले चलो। क्यों इस धरती पर ठोकर खाने रहने दिए हो ? दुनिया में इतने लोगों के लिए तेरे पास जगह है, क्या मेरे लिए ही जगह की कमी पड़ गई है ?" पर भगवान हैं जो सोनमती देवी की पुकार सुनना ही अभी नहीं चाहते थे। यद्यपि बूढ़ी की क्रन्दनपूर्ण पुकार त्रिभुवन साहू को सुनाई पड़ रही थी, फिर भी उनका ध्यान उस ओर नहीं गया। निर्मला की बात सुनकर उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा – "ढलती उम्र में ब्लड प्रेशर कम हो जाता है। इससे चक्कर आता ही है। सीढ़ी पर चढ़ने-उतरने से चक्कर आना स्वाभाविक है। ज्यादा से ज्यादा समय मिले तो सुबह शाम घर बाहर घूमा दिया करो, पर छत पर मत लाना। कभी गिरकर हाथ-पैर तोड़ लेगी तो संभालना भारी पड़ जायेगा। फिर दो भजन गाने लगे।

शेष अगले अंक में।

क्रमशः जारी .....

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ़

यात्रा

गंगोत्री भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। हिमालय पर्वत से उतरकर गंगा की धारा जहाँ समतल मैदान में आती है वह स्थान ही गंगोत्री है। प्रकृति की सुंदरता को देखने का यह बड़ा ही सुंदर स्थान है।

मनीष और प्रशांत ने भी इसी बार गर्मियों में गंगोत्री जाने का विचार किया। वे दोनों घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने सोचा कि इसी बहाने प्रकृति की सुंदरता को बहुत पास से देखने का अवसर मिलेगा और एक तीर्थ की यात्रा भी हो जाएगी। वे दोनों ऋषिकेश से उत्तरकाशी बस से पहुँचे। वहाँ से उन्होंने गंगोत्री तक जाने के लिए दूसरी बस ली। उन्हें तो मालूम हुआ था कि गंगोत्री जाने के लिए बस से उतरकर केवल दो किलोमीटर चलना पड़ेगा। संयोग की बात कि बीच रास्ते में ही बड़ी जोर का आँधी-तूफान आया जिससे बस का रास्ता बंद हो गया। बस ने उनको गंगोत्री से लगभग तीस किलोमीटर दूर एक गाँव के पास छोड़ दिया। यहाँ से गंगोत्री तक उन्हें पैदल ही जाना था।

यह सब देख-सुनकर प्रशांत एकदम हड़बड़ा गया। वह मनीष से कहने लगा – 'ओह, हम इतनी दूर पहाड़ी रास्ते पर पैदल कैसे चढ़ पाएँगे भाई, आगे जाने का तो मेरा दम नहीं। चलो हम आस-पास के स्थान देख लें और वापस चले चलें।

मनीष यह सुनकर ठहाका लगाकर हँस पड़ा और बोला – 'वाह, क्या खूब बात कही। अरे ऐसी निराशा भरी कायरता की बातें शोभा नहीं देती। हम धीरे-धीरे आराम से चलेंगे। जब यहाँ तक आए ही हैं तो फिर गंगोत्री के दर्शन न करके लौटना भी भला क्या बुद्धिमानी है ? अच्छे व्यक्ति जिस कार्य की सोच
लेते हैं, उसे पूरा करके ही रहते हैं।"

मनीष की बात सुनकर प्रशांत कुछ चिढ़-सा गया और बोला – 'हम दोनों साथ-साथ आए हैं। तुम्हें मित्र का भी आखिर कुछ ध्यान रखना चाहिए।'

मनीष उसी सहज मुस्कान के साथ बोला – 'भाई मुझे तुम्हारा पूरा-पूरा ध्यान है। जरुरत होगी तो मैं तुम्हें पीठ पर भी ले चलूँगा। रास्ते में हर प्रकार से तुम्हारी सेवा करूँगा। इस सबके लिए मैं पूरी तरह से तैयार हूँ। तुम्हें तो बस प्रसन्नतापूर्वक चलना होगा। चलते-चलते जहाँ तुम रुक जाओगे, वहीं मैं भी रुक जाऊँगा। थक

Scanned by CamScanner

जाने पर तुम्हारे पैर भी दबा दिया करूँगा।'

प्रशांत ने देखा कि मनीष किसी भी प्रकार वापस लौटने के लिए तैयार नहीं है। उसने यह भी समझ लिया कि मना करने पर वह अकेला ही आगे बढ़ जाएगा। अतएव बेमन से प्रशांत आगे बढ़ने के लिए तैयार हुआ।

पहाड़ी पगडंडी पर दोनों बढ़ चले। उनके आगे की ओर भी अनेक यात्री चले जा रहे थे। ये दोनों तो वाद-विवाद में ही उलझ रहे थे जब कि दूसरे काफी आगे बढ़ गए थे।

रास्ते में प्रशांत ने देखा कि मनीष उससे सदैव आगे रहता है। बड़े ही उत्साह से वह कठिन रास्ता भी पार कर लेता है और हाथ पकड़कर उसे भी पार करा देता है। वह पहाड़ों पर पहली बार आया था पर ऐसे चल रहा था जैसे पहाड़ी रास्ते उसके जाने-पहचाने हैं। यह देखकर प्रशांत से न रहा गया और वह पूछ बैठा – 'मनीष, तुम यहाँ पहली बार आए हो, पर तुम इतनी आसानी से पहाड़ी रास्ते पर कैसे चल लेते हो ? कैसे तुम दूसरों को भी रास्ता बता देते हो ? रास्ते में तुम्हारे मुख पर कहीं भी थकान के चिह्न तक दिखाई नहीं देते। तुम तो मुझसे भी दुबले-पतले और छोटे हो। तुम्हें तो मुझसे भी पहले थकना चाहिए।

मनीष कहने लगा – 'दोस्त' यों शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है। पर शरीर को संचालित करने वाला मन होता है। मन का उत्साह ही शरीर को आगे बढ़ाता है। आशावादी दृष्टिकोण ही जीवन को सफल बनाता है। हम जैसा अपना दृष्टिकोण बना लेते हैं, वैसी ही परिस्थितियाँ भी बन जाया करती हैं। अतएव हर स्थिति में हम प्रसन्न रहें, हर काम में सफल होने का उत्साह रखें – फिर देखें कि कौन-सी परिस्थिति हमें खिन्न बनाती है, कौन-सी से हमारा काम अधूरा रह जाता है।'

मनीष की बातें सुनकर प्रशांत का उत्साह भी बढ़ गया। वह भी अब प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ने लगा। उसने पाया कि उसकी गति में भी अंतर आ गया। पहले की अपेक्षा वह जल्दी से रास्ता पार कर लेता है। मन में प्रसन्नता बने रहने से थकान भी नहीं लगती।

रास्ते के सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हुए घूमते-घामते वे चार दिन में गंगोत्री पहुँच गए। वहाँ का दृश्य देखकर वे ठगे से रह गए। लगभग 20 फीट की ऊँचाई से छ-सात फीट चौड़ी गंगा की धार गिर रही थी। चाँदी से चमकीले जल से ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं। जल पर सूरज की किरणें पड़कर उसे सतरंगी इंद्रधनुष-सा बना रही थीं।

'ओह, तुम्हारे ही कारण मैं दुर्लभ दृश्य देख सका हूँ' कैमरे में उस दृश्य को अंकित करते हुए, भावविह्वल होता हुआ प्रशांत कहने लगा।

मनीष मुस्करा उठा और बोला – मैं तो पहले ही जानता था कि तुम सामने खड़ा ऊँचा पहाड़ देखकर व्यर्थ ही डर रहे हो। भाई, कोई भी कार्य असंभव नहीं हुआ करता। धैर्य और निरंतर तत्परता से हर काम सरल बन जाता है। कोई भी काम तभी तक कठिन लगता है जब तक कि हम उसे प्रारंभ नहीं करते।

'सो तो देख ही रहा हूँ, प्रशांत बोला।'

मनीष कहने लगा – देखो यहाँ आकर अब तुम्हें इतना सबक तो ले ही लेना चाहिए कि जीवन में निराशा भरी नहीं आशा और उत्साह से ही भरी बातें सोचोगे। किसी भी काम को करने से पहले यह नहीं हो सकता, ऐसा नहीं कहोगे – इससे हमारी शक्ति क्षीण होती है। मिलने वाली सफलता दूर हटती चली जाती है।

'ठीक ही कहते हो बंधु ! आज मैं यहाँ यही संकल्प लेता हूँ। सफल और सुखी जीवन के लिए यह आवश्यक है। प्रशांत ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा।

फिर दोनों मित्र लौट पड़े। अबकी बार उन्हें कुछ ही मील चलना पड़ा। रास्ता बन चुका था अतएव जल्दी ही उन्हें बस मिल गई। वे बस में बैठकर ठीक प्रकार से अपने घर पहुँच गए।

गंगोत्री की यात्रा ने प्रशांत का न केवल शरीर और मन ही स्वस्थ बना दिया था। अपितु जीवन की परिस्थितियों के प्रति उसका दृष्टिकोण भी आशावादी बना दिया था। प्रशांत इसके लिए अभी भी मनीष का बड़ा ही आभारी है।

– संकलित

Scanned by CamScanner

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव

वर्ष 2019 में लोकसभा के चुनाव के साथ अखिल विश्व के मानचित्र पर भारतवर्ष का भाग स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। सम्पूर्ण विश्व के सभी देशों की निगाहें डाँक रही थी कि इतनी लम्बी चुनावी प्रक्रिया में से साफ निखर कर सामने आती है या कोशिश को केन्द्रीय बलों के जवानों के सुरक्षा घेरे में निष्ठा के साथ चुनाव कमीशन (ई.सी.) ने फूंक-फूंक कर कदम बढ़ाते हुए लगभग डेढ़ माह में पूरा किया। राजनीतिक दलों द्वारा ई.सी. की आलोचना हुई, किन्तु जिस उदारता और परिवेश से जूझते हुए, बिना विचलित हुए, शांत और संयत चित्त से ई.सी. ने अपने दायित्व का निर्वहन किया वह सराहनीय है।

कुछ एक राज्यों को इस लम्बी प्रक्रिया से विशेष आपत्ति थी, कारण उनकी गुण्डावाहिनी पुराने चुनावों की तरह इस बार मतदाताओं को डरा-धमका कर अपने मताधिकार का प्रयोग करने से रोक न सकी। कुछ एक बूथों पर हमने देखा कि किस तरह से शासक दल के एजेंट मतदाताओं के सहयोग के बहाने अपनी घृणित मंशा पूरी कर लोकतंत्र की मर्यादा को तार-तार कर रहे हैं। किन्तु इस बार जन-जन के हृदय में प्रशासन की उद्दण्डता के विरोध में उपजती चेतना में इतना आक्रोश था कि लोगों ने ऐसी नापाक शक्तियों के विरुद्ध एकजुट होकर खुलकर, प्रतिरोध किया, घायल हुए, कुछ एक की तो मृत्यु भी हो गई, पर अपने मताधिकार का प्रयोग किया और इसी की परिणिति है कि आज पश्चिम बंगाल के लोकसभा निर्वाचन में भारतीय जनता पार्टी को दो की जगह अट्ठारह चुनाव स्थलों पर कमल फूल खिलाने का अवसर प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण देश में चुनाव हुए किन्तु हिंसा का यह प्रारूप किसी भी राज्य में देखने को नहीं मिला। पूरे विश्व ने सी.सी.टी.वी. में सत्ता के गुर्गों के दुराचरण को देखा और उसकी भर्त्सना की। दुर्भाग्यवश सत्ता लोलुप विभिन्न दलों ने देखकर भी मानो कुछ नहीं देखा। किसी ने कहीं कोई प्रतिरोध नहीं किया, कारण सबके सब भारतीय जनता पार्टी के साथ एकीकृत शत्रुवत व्यवहार रखते हैं। ई.सी. ने पर्याप्त तथ्यों के आधार पर सावधानी बरतते हुए दो जगहों पर पुर्नमतदान के आदेश दिए और शांत परिवेश में चुनाव सम्पन्न करवाया, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। अन्तिम चरण के मतदान के बाद एक्जिट पोल की समीक्षा के तुरंत बाद सभी विपक्षी दलों ने जिस तरह एकजुट होकर ई.वी. और ई.वी.एम. मशीन की कार्यशैली का विरोध करना शुरू कर दिया यह उनके अन्दर उपजते भय को दर्शाता है। विरोध स्वरूप कहाँ नहीं गए थे, किसको आरोपित नहीं किया। संविधान के सर्वोच्च मंदिर "सर्वोच्च न्यायालय" को भी प्रभावित करने की चेष्टा की, परन्तु दृढ़तापूर्वक अडिग रहते हुए न्यायालय ने जिस तरह निर्देश दिया यह सम्पूर्ण विश्व के लिए एक उदाहरण बन गया है। भारतीय लोकतंत्र की गरिमा बढ़ी है।

चुनाव देशरूपी शरीर की आत्मा है, चुने गए सांसद के कर्मों की विवेचना है, मतदाताओं की शक्ति, श्रद्धा, आस्था और विश्वास है। इस पूरी प्रक्रिया की अग्नि परीक्षा में तपकर हर सांसद को गुजरना पड़ता है, इसी कारण वे निर्वाचित भी रहते हैं। वे जानते हैं कि उनकी आगजनी के प्रति व्यावहारिकता, चुनावी समीक्षा में किया गया उन्नति मूलक कारण ही उन्हें दुबारा इस महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित कर सकता है। बहरहाल चुनाव अग्नि से तपकर आखिर जितने सांसद चुनकर इस लोकसभा के मंदिर में प्रतिष्ठित हुए है उन्हें हमारी शुभकामना है। वे जनता के सेवक बनकर अपने दायित्व का निर्वहन करने हेतु अपनी प्रतिबद्धता को समझते हुए, गृहतापूर्वक दीन, दुखी, उत्पीड़ित परिवारों की दुर्दशा पर ध्यान देकर अपने कर्तव्य का समुचित निर्वहन करेंगे ऐसी हमारी आशा है, विश्वास है।

प्रकाश चन्द्र बरनवाल
आसनसोल

Scanned by CamScanner

मुखौटा

यूं तो दिन-भर यहां पर्यटकों की चहल-पहल रहती थी, पर पहाड़ों की शाम लम्बी होती है, तो सैलानियों को पहाड़ों की शाम ज्यादा पसंद आती है, बाजार में रौनक भी होती है।

हर दिन की तरह उस दिन भी कबीर और उसके अब्बा अहमदशाह जी अपने शो-रूम में बैठे थे, शहर की जानी-मानी दुकान थी ये। सैलानी अपने घर लौटने से पहले इस शो-रूम से यहां की स्थानीय वस्तुएं जरूर यादगार के रूप में ले जाते थे।

शहर की ये एक ऐसी दुकान थी, जहां हर किस्म की वस्तुएं वाजिब दाम में मिल जाती थी। कबीर अपने अब्बा-अम्मी की इकलौती संतान थे, शिक्षा पूरी होने के बाद कबीर अपने अब्बा के साथ बिजनेस में लग गये थे, साथ में ढेरों कर्मचारी भी थे दुकान में। ग्राउंड और फर्स्ट फ्लोर पर बिजनेस था, सेकेण्ड फ्लोर में उनका आवास था। उनका छोटा सा खुशहाल परिवार था। यों भी एक मनमोहक शाम थी, उनके शो-रूम में हर दिन की तरह ही भीड़ काफी थी, कुछ स्थानीय तो कुछ बाहरी। अचानक शहर में शोर हुआ कि कुछ आतंकवादी घुस आये है। जगह-जगह से बम-विस्फोट की आवाजें आने लगी। लोग गिरते-पड़ते अपने होटलों, घरों की तरफ भागने लगे। शहर की दुकानों के शटर धड़ाधड़ गिरने लगे। कुछ ही पलों में पूरे शहर में सन्नाटा पसर गया। एक अति सम्भ्रान्त प्रौढ़ दम्पति स्थिति की नाजुकता को न समझ सके, और शो-रूम की पहली मंजिल पर फंसे रह गये। उनका होटल शहर के दूसरे छोर पर था, रवाना करते तब भी वो अपने होटल में नहीं पहुंच पाते। कुछ ही मिनटों में पुलिस की गाड़ियां साइरन बजाती गश्ती करने लगी। स्थिति सुधरने के हालात नहीं दिख रहे थे। जल्दी ही पूरे शहर में कर्फ्यू लग गया।

क्षमा कीजियेगा शाह जी, हम लोग निकल नहीं पाये आपकी दुकान से आप लोग परेशान नहीं होइयेगा। हमलोग यहीं बैठते है, हमें आज ही रात की फ्लाइट से निकलना है, हमारा अपने शहर के पुलिस प्रशासन से जान-पहचान है, हम उनसे फोन वगैरह करवा के यहां से जल्द ही निकल जायेंगे।

नहीं सर जी, आप जैसा सोच रहे है, वैसा नहीं है। यहां जब हालात बिगड़ते है, तो पुलिस प्रशासन किसी तरह का खतरा मोल नहीं लेना चाहता। विशेषकर पर्यटकों के लिए तो और भी। आप हमें अपना परिचय दें। आपलोगों को हमारे घर में किसी तरह की दिक्कत नहीं होगी, सिवाय इसके कि आप हिन्दू दिखते है, और हम जैसा कि आप हमारे दुकान के नाम से जान ही रहे होंगे कि हम मुसलमान है।

मैं डॉ. संदीप पाराशर, ये मेरी पत्नी डॉ. कल्पना पाराशर। हम राजस्थान से है। यानि आप ब्राह्मण हुए, हम आपकी शुद्धता का पूरा ख्याल रखेंगे। अहमद शाह ने कहा।

शाह जी ऐसी बात नहीं है, धार्मिक भेदभाव को तो हम बिल्कुल भी नहीं मानते। डॉ. दम्पति के पास वैसे भी इस विकट परिस्थिति में मुस्लिम परिवार में शरण लेने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं था।

कबीर उन्हें अपने साथ ऊपर ले गया। बम-विस्फोट की घटना से घर में सभी लोग डरे-सहमे थे।

अम्मी, गजाला देखो शहर में जब तक स्थिति सामान्य नहीं हो जाती, तब तक ये हमारे मेहमान है, कबीर के दो प्यारे बच्चे भी थे अरीब और शोएब। उन्हें देखकर डॉ. दम्पति को अपने दोनों पोतों की याद हो आई, जो पिछले तीन वर्षों से अमेरिका से भारत नहीं आये थे।

शाह जी का ऊपर घर क्या था, राजस्थान के रजवाड़े परिवारों की तरह ऊपर पूरा राजमहल था। घरों में ऐसी व्यवस्था डॉ. दम्पति को राजस्थान में ही देखने की आदत थी।

Scanned by CamScanner

गजाला एक बड़े से कमरे में उनदोनों को ले गई, इस कमरे में सारी सुविधायें है, आप आराम से यहां रहे। डॉ. दम्पति ने नीचे दुकान से कपड़ों की शॉपिंग की थी, इसलिए उन्हें कपड़ों की दिक्कत नहीं हुई।

शहर के तनावपूर्ण माहौल को छोड़ दें, तो घर का माहौल बेहद खुशनुमा था। दोनों बच्चे बारी-बारी से आकर उनके कमरे में झांक जाते थे।

इण्टरनेट सेवा बंद हो गई थी, बहुत कोशिशों के बाद भी डॉ. दम्पति का किसी से सम्पर्क नहीं हो पा रहा था। कबीर के परिवार में स्थिति सामान्य होने तक उन्हें बेफिक्र होकर यहां सुरक्षित रहने का आश्वासन दिया।

डॉ. दम्पति को भी लगा कि जब हम अपनी गलती से फंस गये हैं, तो तनाव लेने से अच्छा है कि हम आनन्द से इन लोगों के साथ घुल-मिलकर रहें। सच्चाई तो ये थी कि घर पर उनके लिए अपना कोई परेशान होने वाला भी नहीं था। दोनों बच्चे अनन्त और अदिका विदेश में बस जाने के बाद मां-पिता फोन करते तभी उनका कुशल समाचार पता चलता, वर्ना वो खुद से कभी फोन नहीं करते, बावजूद डा. दम्पति यही समझते कि शायद वो समय की कमी से फोन नहीं करते।

कबीर के दोनों बच्चे बहुत जल्दी उनसे घुल-मिल गये। रात सभी ने एक साथ खाना खाया। टी.वी. पर समाचार में शहर के बिगड़ते हालात के बारे में दिखाया जा रहा था। सामान्य होने की कोशिशों के बावजूद डा. दम्पति रात-भर सो नहीं सके।

अगले दिन किसी को घर से निकलना नहीं था, कर्फ्यू की वजह से घरेलू नौकर भी नहीं रुक सके थे, पूरा परिवार मिल-जुलकर काम कर रहा था। सास-बहू का आपसी तालमेल कल्पना के विचारों से मेल नहीं खा रहा था फिर भी वो भी उनके घरेलू कामों में मदद करने लगी। एक ही दिन में सारे लोग एक-दूसरे के परिवार से परिचित हो चुके थे। कबीर के दोनों बच्चे बेहद ही तहजीब वाले थे, उन्हें देखकर डा. दम्पति के अपने पोते-पोतियों की याद हो आई, तहजीब में इनके आगे कहीं नहीं ठहरेंगे उनके पोते-पोतियां। तो क्या मुस्लिम परिवार के बच्चे भी इतने सभ्य और शालीन होते है। एक बार सोच में पड़ गये डा. संदीप। पूरे दो दिन कर्फ्यू लगा रहा। तीसरे दिन तक माहौल थोड़ा शांत होने लगा था तो कर्फ्यू में थोड़ी ढील मिली। डा. दम्पति उसी समय अपने होटल के लिए निकलने के लिए तैयार हो गये।

तब अहमद शाह ने समझाया कि इतनी दूर का सफर बिना रिजर्वेशन के कैसे संभव है, मैं ट्रेन या फ्लाइट के टिकट की व्यवस्था करवा देता हूं तभी आपलोग यहाँ से जाये।

देखिये अहमद जी आपने पहले ही हम पर इतना एहसान किया है अब हमें और शर्मिन्दा मत कीजिए। पर बेहद ही सुलझे और शरीफ अहमद शाह ने उनके फ्लाइट के टिकट की व्यवस्था करवाई और बहुत सारी सौगात देकर उन्हें सुरक्षित पुलिस की संरक्षा में शहर से विदा किया। साथ ही ये भी वादा किया कि वो भी कभी राजस्थान टूर पर आयेंगे। दोनों परिवार में विपरित परिस्थितियों में इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि व्यस्त जिन्दगी में से उन लोगों को भी जब समय मिलता तो एक दूसरे का हाल-चाल लेते रहते।

एक दिन कबीर ने डा. संदीप को बताया कि वो राजस्थान बिजनेस के सिलसिले में आने वाला है। तो डा. संदीप ने गजाला, अरीब और शोए को भी साथ लाने को कहा। कबीर को संदीप की बात जंची, बच्चों की भी छुट्टियाँ चल रही थी उन्हे और गजाला को घूमने का मौका कम ही मिलता था। अतः सभी साथ में संदीप के घर पहुंच गये।

दिल से खुश हुए संदीप और अल्पना। बहुत बड़ा बंगलो था उनका। आवासीय बंगलो से सटे ही सर्वसुविधा सम्पन्न क्लिनिक था। अल्पना ने घर का एक-एक कमरा गजाला और कबीर को घुमाया। देखो, ये मेरे बेटे अनन्त का कमरा है। अनन्त को बांस और लकड़ी की बनी चीजें बहुत पसन्द हैं। सचमुच अनन्त

Scanned by CamScanner

का कमरा बांस और लकड़ी के फर्नीचर और खूबसूरत नक्काशी से सजा हुआ था। पूरा कमरा कहीं से सजा हुआ इतना जीवन्त लग रहा था, मानो अभी-अभी कोई उठकर गया हो। अनन्त और अंकिता डा. दम्पति के दो बच्चे थे। अनन्त ने तो अमेरिका से ही पढ़ाई की थी और अभी पत्नी और दोनों बच्चों के साथ अमेरिका में ही बस गया था। जैसा कि डा. साहब ने बताया था कि पिछले तीन वर्षों से वह भारत नहीं आया था। अनन्त के कमरे के बाहर की बालकनी साजे फूलों गमलों से भरी पड़ी थी, तरह-तरह के फूल खिले थे, काले गुलाब ज्यादा आकर्षित कर रहे थे, अल्पना ने बताया अनन्त को फूल बहुत पसन्द है, विशेषकर काले गुलाब। एक माली तो विशेष रूप से अनन्त के फूलों की देखभाल के लिए रखा हुआ है।

यों तो बहुत खुशी की बात है अल्पना जी, कि बेटा सात समुन्द्र पार है, पर आप उसकी पसन्द का इतना ख्याल रखती है।

हाँ भाई जी, इधर उसका ऑफिस वर्क ज्यादा हो गया है, वर्ना दो तो दो साल बीतते-बीतते एक बार जरुर आ जाता था।

और अंकिका, गजाला पूछ बैठी। अंकिका तो कनाडा में रहती है। दोनों भाई-बहन, साल छः महीने में मिलते रहते है। अंकिका और दामाद राघव दोनों की पोस्टिंग कनाडा में ही है। दामाद इंजीनियर है और अंकिका इंटिरियर डेकोरेटर है, इसलिए मैं आप लोगों को अंकिका का कमरा दिखाती हूं।

अंकिका के कमरे की खूबसूरती देखकर वाह-वाह कर उठी गजाला। हां अंकिका को डेकोरेशन का शौक शुरु से ही है सो दुनिया के कोने-कोने से डेकोरेटिव आइटम लाती और मंगाती रहती है, अल्पना ने बताया।

हाँ, वाकई ऐसा लग रहा है, हम किसी प्राचीन, दर्शनीय स्थल पर आ गये है, इस कमरे की साफ-सफाई में तो रोज कई घंटे लग जाते होंगे। हां, भाई जी अंकिका को सफाई बहुत पसंद है। अकेला एक नौकर इस कमरे की साफ-सफाई के लिए ही रखा हुआ है।

अगले दिन से कहीं दिन भर मार्केटिंग कर लेता, शाम में गजाला और बच्चों के साथ घूमने निकल जाता। डा. दम्पति अति व्यस्तता की वजह से ज्यादा वक्त नहीं दे पाते। सबको राजस्थान बहुत पसंद आ रहा था।

घर के पीछे बहुत बड़ा सर्वेन्ट क्वार्टर था, जहां घर और क्लिनिक के नौकर और कम्पाउंडर रहते थे। स्थानीय कर्मचारी सब में बंट जाते थे। खाना बनाने वाला खानसामा भी सब में अपने घर चला जाता। इसका मतलब इतने बड़े घर में डा. दम्पति अकेले ही रहते थे। दिन भर घर में चहल-पहल रहती, नौकर-चाकर का आना-जाना लगा रहता, पर जाने क्यूं आने के दिन से ही गजाला को रात का सन्नाटा खटक रहा था।

फिर भी एक सप्ताह का समय बीत गया, घर से अम्मू अम्मी का लगातार फोन आ रहा था, कि उनलोगों को बच्ची के बिना अच्छा नहीं लग रहा। गजाला ने उन्हें आश्वासन दिया कि दो दिन में वो लोग वहां से निकलने वाले है। आपलोग अपना ख्याल रखें। जाने क्यूं गजाला को ऐसा लग रहा था कि इस घर में कुछ गलत हो रहा है। पर क्या खुद उसे भी पता नहीं। डॉक्टर दम्पति उन्हें समय न दे पाने की वजह से शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे, इसलिए उन्होंने क्लिनिक की जिम्मेदारी दूसरे डॉक्टर और कम्पाउंडर को दे एक पूरा दिन उनके साथ गुजारने की सोची थी।

दिन भर घूमने के बाद सभी लोग थक गये थे। आज रात्री का खाना में बाहर खाने जाने का प्रोग्राम था। ऐन वक्त पर गजाला ने जाने से मना कर दिया। यूं भी आज उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही थी। कल सफर में निकलना था, इसलिए आज उसने आराम करने का मन बनाया। किसी ने उस पर दबाव नहीं डाला।

ग्यारह से ऊपर बज रहे थे, पर अभी तक सारे लोग होटल से खाकर नहीं लौटे थे। गजाला को भी नींद नहीं आ रही थी, अचानक उसे प्यास महसूस हुई, देखा तो पीने का पानी खत्म हो चुका था। दो सीढ़ियां उतरकर

Scanned by CamScanner

नीचे गयी, पानी लाने। गजाला ने ध्यान दिया था, बिना इस्तेमाल वाले सभी कमरों में ताला लगा रहता था, पर सीढ़ी से गुजरते हुए जिस कमरे पर निगाह गई तो आज वो दरवाजा खुला क्या यूं ही सटाया हुआ था। आगे बढ़ते हुए उसने कदम ठिठक गये। ऐसा लगा इस कमरे में कोई है। इतने बड़े घर में वो बिल्कुल अकेली थी, एक बार वो तो डर गई। पर हल्का सा धक्का देने पर दरवाजा अपने आप खुल गया। सहम सी गई गजाला, एक अति बुजुर्ग महिला सामने टूटी खाट पर बैठकर सूखी रोटियां खा रही थी। गल चुके शरीर से उसके चेहरे की एक-एक रेखाएं स्पष्ट नजर आ रही थी। थक सी रह गयी गजाला ये कौन है ? बुजुर्ग महिला ने भी घबड़ाकर झट से रोटियां अपनी साड़ी में छुपा ली। शायद सूखी रोटियां उनसे खाते नहीं बन रही थी, इसलिए वो एक कटोरे में पानी लेकर रोटिया उसमें भिंगाकर खा रही थीं, घबराहट में उनके हाथ से कटोरे का पानी भी गिर गया।

गजाला ने उन्हें झट से संभाला और बोला कि आज घबड़ाएं नहीं, जल्दी से बताएं कि आप कौन है ? और इस सुखी सम्पन्न परिवार में आपकी ऐसी स्थिति क्यों है ?

मैं संदीप की मां हूं बेटा।

क्या ? चीख सी निकल गई गजाला की। उसके सामने अपनी प्रिय सास का चेहरा तैर गया।

संदीप की बहू मुझे बिल्कुल पसंद नहीं करती है, कहती है मैं अनपढ़ गंवार अगर किसी के सामने गई, तो उसकी बेइज्जती होगी, कांपती आवाज में उन्होंने बताया। बरसों से मैं इसी कमरे में कैद हूं, दिन भर बीतने के बाद रात में मुझे कुछ रोटियां मिल जाती है कभी-कभी साथ में सब्जी भी वर्ना ज्यादातर ये सूखी रोटियां, भले ही घर में छप्पन पकवान बने हो और कभी-कभी तो वो भी नहीं, इसलिए मैं कुछ रोटियां हमेशा अपने पास बचाकर रखती हूं। न मैंने पति का सुख भोगा, न बेटे बहू, पोते-पोतियों का। संदीप पेट में था, तभी इसके पिता का देहान्त हो गया। बहुत मेहनत करके मैंने संदीप को पढ़ाया, पर शादी के बाद तो ही वो भी अपनी पत्नी के साथ मिलकर मुझे बेगैरत बना बैठा। ईश्वर मुझे अपने यहां भी नहीं बुला रहा। मैं इस कोठरी में कैद होकर जिन्दगी के एक-एक दिन काट रही हूं। कहकर वृद्धा फूट-फूटकर रो पड़ी।

मां जी मैं आपको आजाद कराऊंगी। अब आज की रात और इस कमरे में गुजार लीजिए।

कहकर गजाला पूर्ववत् दरवाजे को सटाकर बाहर निकल गई। क्या कोई इंसान अपनी सगी मां के साथ ऐसा कर सकता है, जिसके घर इतने सारे नौकर-चाकर उसके इशारे पर चल रहे हो, उस घर में मां के लिए कुछ रोटियां और आजीवन कैद ! घृणा से भर उठा गजाला का मन। इससे तो अच्छा जेल की कोठरी होती होगी।

नहीं जेल की कोठरी तो संदीप और अल्पना को मिलनी चाहिए। मां को तो आजादी, खुली हवा में सांस लेने का हक दिलाना ही होगा। उसी क्षण गजाला ने सोच लिया कि डा. दम्पति के चेहरे से सभ्यता का मुखौटा उतारना ही होगा। इस महलनुमा घर में एक बूढ़ी औरत के साथ कितना अन्याय हो रहा है, वो भी सिर्फ इसलिए कि मां अनपढ़ है, ये बातें गजाला ने कबीर के लौटने पर बताई। दूर देश में बसे बच्चों की पसंद-नापसंद का इतना ख्याल और आंख के सामने रहती मां तिल-तिल को मर रही है, उन दोनों ने उसी वक्त डाक्टर दम्पति के खिलाफ कठोर कदम उठाने की ठान ली, वर्ना अगले दिन वो जब यहां से निकल जायेंगे तो शायद मां की मृत देह ही निकलेगी।

अपने शहर में डाक्टर दम्पति को महफूज रखने वाले कबीर को आज उनके ही घर में पुलिस बुलाकर उसके हवाले कर देने में कबीर ने जरा भी देर नहीं की। आज शायद मां-बाप के आचरण का ही असर था कि दोनों बच्चे विदेश बस गये थे और उन्हें अपने माता-पिता की परवाह नहीं थी इसी से कहा जाता है, जैसा बोओगे वैसा पाओगे।

सीमा प्रकाश
बबुनिया रोड, सीवान

Scanned by CamScanner

प्रिसाइडिंग ऑफिसर की डायरी

इतवार को जब असम के जिला हैलाकांदी प्रशासन का फोन आया कि उसी दिन मुझे जिला मुख्यालय के प्रशासनिक भवन में पहुँचना है, तो उसी वक्त मुझे आभास हो गया था कि किसी दुर्गम स्थल पर चुनाव कराने हेतु मेरा चुनाव किया गया है। नियमतः मंगलवार के चुनाव हेतु मुझे एक दिन पूर्व अर्थात रविवार को सुबह में जाना था। मगर यहाँ तो मुझे दो दिन पूर्व ही बुलाया जा रहा था। लिहाजा आवश्यक सामान लेकर हैलाकांदी पहुँचा। जिला मुख्यालय कार्यालय में मुझ जैसे अनेक और भी लोग थे, जिन्हें दुर्गम स्थान में चुनाव-कार्य के लिए पहले पहुँचना था। उन्हें आवश्यक सामग्री और सूचनाएँ उपलब्ध कराए जा रहे थे। मेरे टीम में कुल चार जन थे, जिनमें से दो आ चुके थे और दो का आना बाकी था। वे कब आएँगे, पता नहीं था। खैर उनमें से एक चार बजे शाम में प्रकट हुआ, तो दूसरा सात बजे रात में आया। जबकि सभी को दोपहर से ही उपस्थित रहने की सूचना लगातार दी जा रही थी। चूँकि वे स्थानीय थे, उन्हें शायद चुनाव का रंग-ढंग पता था, शायद इसलिए उन्हें हड़बड़ी न थी।

हैलाकांदी शहर में होटलों के पौ-बारह थे। इन होटलों में बना कुछ भी खाद्य-सामान देखते-देखते खत्म हो जाते थे। आखिर चुनाव का मौसम जो था। खैर, एक होटल में कुछ खाकर नाइट-डिनर का सुख लिया। सामने एक बस तैयार खड़ी थी, जिसमें हम सभी को चुनाव सामग्री के साथ सवार होना था। नौ बजे बस चली। हैलाकांदी के बाद लाला, फिर कलीचेरा और फिर रामनाथपुर करबा। चारों तरफ घुप्प अंधेरा। और इस अंधेरे को चीरते हमारी बस सड़क पर भागती जा रही थी। हम सभी अपने और सरकारी सामान के साथ चुप्प बैठे थे। मानो हमें कहीं जिबह के लिए ले जाया जा रहा हो। दो घंटे की निरंतर यात्रा के बाद ११ बजे रात में हम रामनाथपुर पहुँचे। वहाँ सड़क पर कुछ गाड़ियाँ खड़ी थीं। हर भारतीय करबे के समान यहाँ भी बत्ती गुल थी। घने अंधेरे के बीच सबके चेहरे पर यही सवाल, अब क्या होगा, और कि अब हम क्या करें। हमें कहाँ, कैसे और क्यों जाना है, यह बताने वाला कोई न था।

आपस में पूछताछ करने पर पता चला कि यहीं के स्थानीय प्राथमिक विद्यालय में हमारे ठहरने की व्यवस्था है और कि हमें गाइड करने के लिए एक सब-इंस्पेक्टर भी है। हम उसकी गाड़ी के पास गये। लेकिन वह अपने ठाठ सूमो में बैठे-बैठे अपना बखान करता रहा कि वह कितना बड़ा तोप है, और कि पूरा रामनाथपुर उसके मुट्ठी के नीचे है। हमें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। हम सभी की टूटी-फूटी धूल भरी सड़क पर आधेक घंटा मूँह खड़े रहे कि एक मरियल सा आदमी टॉर्च जलाए प्रकट हुआ और हमें अपने पीछे आने का संकेत देकर तेज गति से एक ओर की पगडंडी पर बढ़ चला। 'महाजनो येनः गतः सा पन्थाः' के अनुसार हम सभी उसका अनुसरण करने लगे। हमलोग तीन दिशाओं की ओर जाने वाले तीन पार्टी के सदस्य थे, सो हिम्मत थी कि हम फिलहाल एक समूह में है।

लगभग सौ मीटर की दूरी तय करने के उपरांत एक मकान की ओर इंगित कर मार्गदर्शक अंधेरे में गुम हो गया।

हिन्दुस्तान के लगभग सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालयों और पैसेंजर ट्रेनों में कोई खास फर्क नहीं होता। भवन ठीकठाक था, मतलब पक्का था। टॉर्च की रोशनी के बीच मोमबत्ती जलाये गये। अनुभवी लोगों ने अपने अनुभव के अनुसार तुरंत बैग अथवा बेडरक जोड़कर चौकी तैयार कर अपना बिछावन डाल लिया। इस लूट में जो महरूम रह गये, वे जमीन में ही अपना बिछावन बिछा लिये। बिस्तर क्या था, एक चादर डाली, बैग सिरहाने किया और साथ लाया कंबल ओढ़ लिया कि 4-5 घंटे की ही तो बात है। वैसे भी मकान और नींद बिस्तर का हाल नहीं पूछती, बस वहीं परस देकर पड़ रहती है। शायद प्रशासन को इसकी अच्छी जानकारी है। मैंने भी जमीन पर अपना बिस्तर जमाया। आखिर साधु-संन्यासी और बाबा लोग तो जमीन पर ही धूनी रमाते है, फिर हम क्यों नहीं।

Scanned by CamScanner

लगभग 6 : बजे नींद खुली तो सुबह की उजास फैल चुकी थी। कुछ लोग उठकर अपने-अपने ढंग से नित्य क्रिया से निवृत्त हो रहे थे। शिविरालय से थोड़ी दूर एक विधवा की झोपड़ी थी, जिसमें वह अपने चार-चार छोटे-छोटे बच्चों के साथ रह रही थी। वहीं एक कुआंनुमा गड्ढा था, जिसमें से कुछ स्थानीय लोग पानी भर रहे थे। वहीं से हमारे लिए भी बाल्टियों में भरकर पानी आया था। अब ढेढ़ दर्जन लोग इसी से निबटाते रहे अपनी नित्य क्रियाएं। मरता क्या न करता, सो सभी निबट भी रहे थे। कुछ लोग पानी में भिगोकर घूड़ा खाने में लगे थे। उस महिला से चाय के लिए अनुरोध किया गया, तो वह तुरंत चुल्हा जलाने में जुट गई। अपने टूटे-फूटे बर्तनों में जहाँ तक संभव हुआ, उसने चाय और सस्ते बिस्कुटों का एक पैकेट परोस दिया। हमने जैसे-तैसे उसे ग्रहण किया और उसे पैसे दिये। मैंने साथ लाए बिस्कुट और सिक्कर के कुछ पैकेट उसके बच्चों के बीच बाँट दिये।

मेरे एक साथी को गैस और सरदर्द की दवा लेनी थी, तो मैं भी उसके साथ हो लिया कि शायद उधर दुकान में कुछ खाने को मिल जाए। वहीं एक दूकान में पूरी-सब्जी खा ली। हमारे पीछे एक आदमी सुबह से ही पीछे लगा था और और वे-सिर पैर की बक-बक किये जा रहा था। चुनाव के वक्त यह कोई अनहोनी बात नहीं कि जरुरतमंद को मूढ बनाने का अवसर न मिले। और इस समय तो वह संसार का सबसे समर्थ व्यक्ति बना बैठा हमें समझा रहा था कि हमें चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वह हमारे साथ है और वह सब कुछ ठीक कर देगा। हमलोगों के साथ उसने भी जमकर नाश्ता किया। जब दुकानदार ने 70 रुपये का मौखिक बिल पेश किया, तो मेरे मुँह से साहस निकला कि मैं किसी ऐसे-गैरे के बिल के पैसे क्यों दूँ।

तभी एक व्यक्ति सूचना लेकर पहुँचा कि पुलिस मुझे शीघ्र आगे चलने के लिए बुला रही है। ऐसे में बहस करना उचित न समझ जब तक मैं अपना बटुआ निकालता, किसी व्यक्ति ने पैसों का भुगतान कर दिया था। मुझे यह काफी नागवार लगा कि कोई अपरिचित मेरे बिलों का भुगतान करे। पता नहीं यह कौन है, कोई सरकारी आदमी अथवा किसी राजनीतिक दल का सदस्य भी हो सकता है, जो बाद में मुझसे फायदा लेना चाहे।

चुनाव के नाम पर करोड़ों के वारे-न्यारे होते हैं, यह मैंने सुना-पढ़ा था। और अब मैं भी उसमें भागीदार हो रहा था। खैर शीघ्रतापूर्वक मैं वापस आश्रय-स्थल पर आया। वहाँ असम बटालियन के दर्जन भर जवान हमारे साथ चलने को तैयार बैठे थे। उनका सब-इंस्पेक्टर अभिवादन करने के उपरांत बोला "यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। बस 15-20 किलोमीटर पैदल का रास्ता है। सकलीफ की कोई बात नहीं है। हम आपके साथ हैं।"

यह सुनते ही हमारे हाथ-पांव फूल गये। जंगल-पहाड़ में सामान के साथ 15-20 किलोमीटर पैदल चलना मामूली बात है क्या ! मैं अतिरिक्त विनम्रता दिखाते हुए बोला "अब चलना तो है ही। लेकिन यदि कोई भारवाहक मिल जाता तो ठीक रहता।"

"हाँ पोर्टर तो मिलेंगे। मगर उन्हें प्रति पोर्टर दो सौ रुपये देने होंगे।"

मरता क्या न करता। मैं इसके लिए तैयार था। तभी एक जवान ने सूचित किया कि हमारे सेक्टर ऑफिसर ने तीन पोर्टरों को हमारी मदद के लिए भेजा है।"

हमारी जान में जान आई। पोर्टर तत्परतापूर्वक सरकारी चुनाव सामग्री के साथ हमारे बैग को भी बैल्गियों में बाँधने लगे थे। अब हम कूच के लिए तैयार थे। सब-इंस्पेक्टर के इशारे पर हम गाँव की पगडंडियों पर बड़े-बड़े ढग भरते उसके पीछे चल दिये। पोर्टरों को जैसे पंख लगे थे, कि पहिये। वे निरंतर आगे बढ़ते जाते थे और हम पीछे छूट जाते थे। इन सबको नियंत्रित और संयमित करने का काम सब-इंस्पेक्टर कर रहा था। ग्रामीण गण हमें अजीब निगाहों से देख रहे थे।

गांव का रास्ता पीछे छूटा। अब छोटे-बड़े टीले आने आरंभ हो गये थे। सामने मिजोरम के भूरे-काले पहाड़ों की श्रृंखलाएँ दिख रही थीं, जिन पर धूप पसरा हुआ था। अब हम पहाड़ों की चढ़ाई वाले पगडंडियों पर चल रहे थे।

मिजोरम की मनोरम पहाड़ियों से निकलकर दक्षिण

Scanned by CamScanner

असम की ओर बहने वाली फाटारबाल नदी का विशालकाय पाट हमारे सामने था। उस पर बांस का बना पुल था, जिसे पार कर हमें आगे बढ़ना था। थकी शिथिल कर उस पुल पर पग धरते हम आगे बढ़े। जरा सा भी संतुलन बिगड़ता नहीं कि हम पचासेक फुट गहरे नदी में जा गिरते। मगर आखिर पर ऐसा होता नहीं। क्योंकि प्राणों का मोह मनुष्य को चौकन्ना कर चलना सीखा देता है। सो हम संभल कर चल रहे थे।

असम बटालियन का एक जवान मेरे साथ मेरे बराबर ही चल रहा था। मैं जिस स्थान से आया था, वहाँ वह कुछ समय तक रह चुका था और वह अच्छी हिंदी भी बोल रहा था। कभी-कभार अपने मोबाइल पर हिन्दी फिल्मों के गीत भी बजा रहा था। पहाड़ी रास्तों पर मोबाइल के टावर कभी उभरते, कभी गायब हो जाते। कई बार मैंने मोबाइल फोन पर कहीं बात करने की कोशिश की तो असफलता हाथ लगी। इन पहाड़ों पर बंगलादेश और मिजोरम से विस्थापित रियांग जनजाति के लोगों को बसाया गया है, यह मैंने सुना था। लेकिन रियांग लोगों के बारे में कुछ नहीं जानता था। इस बस्ती रियांग जनजाति के लोग अपनी पीठ पर शाक-भाजी टोकरी लटकाए रामनाथपुर में आज लगने वाली साप्ताहिक हाट के लिए जा रहे थे। टोकरियों में फूट, आलू की सीलियाँ और वनोपज थे, जिन्हें बेचकर जो मिलेगा, उससे ये खरीदेंगे किराना तेल, चीनी, चायपत्ती, नमक, तम्बाकू, साबुन, कपड़े जैसे रोजमर्रा के जरूरी सामान। उनसे कुछ बच गया, तो पुरुष खरीदेंगे कुछ सस्ती मिठाइयाँ और नमकीन। महिलाएँ खरीदेंगी सस्ते प्रसाधन सामग्री, मनकों की मालाएँ अथवा सिलट के आभूषण। एक तो अभाव की मार, दूसरे विस्थापन का दर्द। छल-छद्म से कोसों दूर, सामान्य जीवन से अलग इनकी जरूरतें कितनी सीमित हैं। रास्ते में एक और बड़ा सा पहाड़ी नाला मिला। नाम है – वेंगन नाला। एक विशालकाय वृक्ष को काटकर, उस पर गिराकर पुल बना दिया गया है। इसके किनारे कुछ स्थानीय लोग स्नान कर रहे थे।

"ये लोग यहाँ स्नान वगैरह कर अपने कपड़े वगैरा भी धो लेते हैं।" सब-इंस्पेक्टर बोला "ऊपर पहाड़ पर पानी की घोर समस्या है। हमलोग भी यहीं थोड़ी देर रुककर पानी पी लेते हैं।"

फ्रिज के पानी के समान शीतल और साफ पानी था। हमने पानी पिया और बोतलों में भी भर लिया। इसके बाद आगे बढ़चले। जंगल-पहाड़ के बीच इक्का-दुक्का बाँस के घर मिलते। उनके साथ होता गाय, सुअर और मुर्गियों के दड़बे। एक घर के सामने के बेर के पेड़ पर एक जवान ने ढेला फेंका तो झलझलाकर पके बेर गिरने लगे। बेरों को चुनकर उसने अपने जेबों में भर लिया था। इन जवानों के कपड़ों से मर्दानगन और एसएलआर टंगे थे। छाती पर बुलेट प्रूफ था और कमर में भी बुलेट से लैस बेरेल। इन्हीं के बीच एक रियांग गृह स्वामिनी से मांगे गये थोड़े नमक के साथ बेर खाते जवान साथ चल रहे थे। धूप तेज हो चुकी थी। हम खासी श्रम थे, फिर भी पसीने से स्नात थे। और रास्ता था कि खत्म होने का नाम नहीं लेता था। फिर भी हम घिसटते हुए आगे बढ़ते जाते थे।

लगभग चार घंटे की निरंतर यात्रा कर हम उस रियांग बस्ती में प्रविष्ट हुए, जहाँ हमें पहुँचना था। वहाँ पहुँचकर एवरेस्ट जीती फतह करने जैसा अहसास हुआ। मगर अभी तो बस शुरुआत थी। पढ़ाव डालने वाले प्राथमिक विद्यालय तक पहुँचने के लिए हमें एक और पहाड़ की चोटी पर चढ़ना था। वहाँ पहुँचकर फिर हमने वहाँ पड़े बेंच और डेस्कों को जोड़कर चौकी तैयार की और उस पर चादर बिछाकर लुढ़क पड़े। थोड़ी देर बाद सामग्रीनी के प्यालों में भरकर चाय और बिस्कुट लेकर एक रियांग लड़की आ गई। एकदम साधारण सी वेशभूषा मगर पर्वतीय लावण्य उसमें से फूटा पड़ता था।

ऐसे कठिन दौर में जो भी कुछ मिलता है, वह अमृत समान लगता है। चाय पीकर हमें ताजगी का अहसास हुआ।

पैर मन भर के हो रहे थे। मैं यूँ ही लेट गया। तब तक कुछ रियांग लोग इकट्ठा हो गये थे। सब-इंस्पेक्टर उनसे बंगला में बात कर रहे थे। इनलोगों की बातचीत से आभास हुआ कि इधर कितनी घोर अशिक्षा है। ये रियांग भाषा को छोड़ बंगला, हिन्दी, अंग्रेजी कुछ नहीं जानते।

Scanned by CamScanner

SSMC
SAVITRI SURGICARE & MATERNITY CENTER

सावित्री सर्जिकेयर एवं मेटरनिटि सेन्टर

विग बाजार के पास, सहयोगी नगर - 2, धनवाद
मो0 : 7250633670, 9031810901

डॉ. रीना वर्णवाल
MBBS, MS (Delhi)
Consultant Obs & Gynae
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ

डॉ. वी. के. वर्णवाल
MBBS, MS (Surgery), FIAGES
Consultant General, Laparoscopic
Surgeon & Uro-Surgeon

Specialities

- Laparoscopic Surgery
  (दूरवीन द्वारा पथरी, अपेन्डीक्स, बच्चादानी, हर्निया का ऑपरेशन)
- Cystoscopy, D.J. Stenting, URS & TURP
  (दूरवीन द्वारा पेशाव की समस्या का ऑपरेशन)
- दर्द के बिना Normal Delivery

24 घंटे आकस्मिक सेवा उपलब्ध

Scanned by CamScanner

IITians HUB

Hub of Advanced Coaching

(ONLY IITIAN FACULTIES)

TARGET
JEE MAINS, ADVANCED

XI, XII
CBSE / ICSE / STATE

Free Demo Classes
From 25th March Onwards

Admissions Open

Mr. GAURAV BARANWAL
Director and HOD Physics
B. Tech IIT Dhanbad
Ex. Tata Motor Limited
5yrs Teaching Exp.

FOR MORE DETAILS VISIT OUR CENTER

Center :
IITIAN HUB
1st Floor, Radha Swami Arcade
Saraidhela, Dhanbad
Contact : 8877589749, 7992217886

12/19

Scanned by CamScanner

बस कुछ लोग है, जो मिजोरम की राजधानी आइजल अथवा हैलाकांडी या शिलचर गये होंगे और इसलिए वे बंगला, हिन्दी या अंग्रेजी जानते है। वैसे रियांग युवको का हिन्दी उच्चारण एकदम साफ और स्पष्ट था और वे धारा प्रवाह हिन्दी बोल भी लेते थे। सब-इंस्पेक्टर के निर्देशानुसार उन्होने शीघ्रतापूर्वक विद्यालय के पीछे एक अस्थायी शौचालय और बाथरूम बना दिये थे। प्लास्टिक के एक ड्रम मे पानी भर दिया था और अब हमारे सहयोगी हाथ मुंह धो रहे थे।

"यहाँ पानी की बहुत दिक्कत है" एक रियांग युवक बता रहा था – "कृपया हिसाब से ही पानी का उपयोग करें।"

मन मारकर सभी को थोड़े पानी से ही हाथ-मुँह धोकर संतोष करना पड़ा।

लगभग दो बजे भोजन हाजिर था। स्थानीय चावल का भात, मसूर की दाल, नीचे घाटी मे बनी पोखर की मछली और आलू की सब्जी थी। भूँकि स्थानीय लोग तेल-मसाले का उपयोग नहीं के बराबर करते हैं, खाना फीका था। मगर भूख का स्वाद से कोई संबंध नहीं होता। सो सहजतापूर्वक हम भोजन कर रहे थे, क्योंकि भोजन के साथ नमक और मिर्च भी तो था। मेरे साथी आपस में बात कर रहे थे – "अभी पूरे 24 घंटे बाकी हैं।"

गांव में बिजली पहुँचने का सवाल नहीं है। फिर मोबाइल चार्ज कैसे होते हैं। एकाध घर में सोलर एनर्जी का सेट लगा है। उसी से चीन निर्मित टॉर्च, मोबाइल आदि चार्ज होते हैं। नहीं तो फिर रामनाथपुर मे चार्ज किये जाएं। मगर वहीं कौन सी बिजली चौबीस घंटे उपलब्ध रहती है। असम बटालियन कैम्प में भी सोलर एनर्जी सेट है। मगर पचासेक लोगों को मोबाइल, टॉर्च आदि कितनी मुश्किल से चार्ज होते होंगे।

"काम बहुत है" मेरे सहयोगी बता रहे थे – "कुछ अभी काम कर लें, तो आसानी रहेगी। आपको सारे मत पत्रों पर हस्ताक्षर भी करने हैं। काफी कठिन काम है।"

"हो जायेगा" मैं बेतकल्लुफ होकर बोला – "अभी बहुत समय है।"

"यहाँ बिजली नहीं है। रात में अंधेरे में कैसे काम कर पाएंगे।"

"ठीक है।"

चुनाव सामग्री के गट्ठर खुले। उन्हें मिलान कर व्यवस्थित किया जाने लगा। सारे दस्तावेज असम की राजभाषा बंगला में थे। असम की दो राजभाषाएँ है – असमी और बंगला। मेरे सहयोगी उन्हें पढ़-पढ़कर बताते और मैं समझकर अथवा बिना समझे ही उन पर हस्ताक्षर करता जाता था। मुझे मालूम था कि चुनाव में अंतिम सत्य सिर्फ मतपेटी अथवा बैलेट बॉक्स है। उसको यदि सुरक्षित कर लिया जाए, तो चुनाव की नैय्या पार है। चुनाव अधिकारी खतरे से बाहर है।

"एक बार प्रिसाइडिंग ऑफिसर की डायरी भी तो समझ लीजिए" मेरे सहयोगी कहते हैं। वह जैसे मेरी मंशा भांपकर बोले – "वह भी महत्वपूर्ण है। वहाँ सामान जमा करते वक्त वही पहले माँगते हैं।"

मेरे सहयोगी शीघ्रतापूर्वक मुझे आवश्यक जानकारी देते हुए जरुरी कागजात भरने की खानापूरी कर रहे थे। देखते-देखते पाँच बज गये। शाम का धुंधलका बढ़ने लगा था और इसी के साथ सिहरन भी। ठंडी हवा बहने लगी थी। अंधेरा घिरते ही सरकारी मोमबत्ती जला दिया गया था, जिसकी टिमटिमाती रोशनी में हम सभी कुछ-कुछ सहमे से बैठे थे कि कल क्या होगा।

'कल सब ठीक होगा' जैसे यह जवाब देते एक रियांग युवक इमरजेंसी लालटेन रख गया था। इससे इसके प्रकाश मे मुझे कुछ और काम संपादित करने का मौका मिल गया था। बाहर अलाव जला था, जिसके इर्द-गिर्द सुरक्षा के जवानों के साथ कुछ स्थानीय लोग बैठे थे। आधेक घंटे के बाद अब वहाँ सिर्फ सुरक्षाकर्मी थे। लगभग नौ बजे भोजन आया। भोजन में वही था – स्थानीय चावल का भात, मछली और सब्जी। मगर इस बार की सब्जी स्वादिष्ट बनी थी। भोजन परोसने और कराने में आत्मीयता का बोध था।

लगभग नौ बजे तक भोजन कर हम सभी सोने की तैयारी करने लगे। बाहर घुप्प अंधेरा था। कहीं कोई प्रकाश की किरण काँधती, तो वह भी यहाँ साफ दिख

Scanned by CamScanner

जाता था। आसमान बिलकुल से साफ हुआ, स्वच्छ और साफ। विद्यालय के बाँस की हिदीनी से छन-छनकर शीतल हवा अंदर आती थी। बाहर अलाव के इर्द-गिर्द गुलाबी पहन देते बैठे थे। तभी एक सिपाग युवक आया और हमें ओढ़ने के लिए एक-एक कंबल दे गया। हमारा एक सहयोगी फुसफुसाकर मुझसे बोला – "बत्ती बुझा कर आप भी सो जाइए, सारा उत्तरप्रदेश का इलाका है। दूर-दूर तक प्रकाश जाता है।"

मैंने बत्ती बुझा कर मोमबत्ती जला दी और चार बजे का अलार्म अपने मोबाइल में लगा कर मैं लेट गया।

लगभग चार बजे सुबह उठकर मैं वहाँ से दूसरे प्राथमिक विद्यालय में जाकर चुनाव की व्यवस्था करने की तैयारी करने लगा। सामान पैक कर लगभग छः बजे हम पुरा विद्यालय में पहुंचे। वहाँ विद्यालय का जो हाल देखा, तो मुझे रोना आ गया। बाँस के लट्ठों को जोड़कर बच्चों के लिए बैंच और डेस्क बने थे। टेबल-कुर्सी का पता नहीं। जमीन भी कच्चा, जैसे आज ही उसका प्लास्टर होना है। पूर्वांचल के घरों की दीवारें, दरवाजे और खिड़कियां बाँस की चटाइयों से बनी होती हैं, सो यहाँ भी था। मगर ये तो ऐसी थी कि कब भरभराकर गिर पड़े, कहा नहीं जा सकता। आधी छत फूस की थी और आधे पर करकट की चादरें थीं।

"इससे अच्छा तो पहले वाला विद्यालय था" मैं बोला – "कम से कम वहाँ ढंग के कुर्सी-टेबल-बैंच-डेस्क तो थे। यहाँ हम किसी तरह सामान जमाकर बैठ भी गये, तो लिखेंगे कैसे ?"

स्थानीय लोगों में फुसफुसाहट हुई और देखते-देखते कुछ कुर्सी-टेबल-बैंच-डेस्क हाजिर हो गये।

मैंने तत्काल एक तरफ अपने चारों सहयोगियों को तथा दूसरी तरफ उम्मीदवारों के एजेंटों को बिठाया। अब सभी अपने-अपने काम में लग गये थे। बाहर स्थानीय महिला पुरुषों की भीड़ लगनी शुरु हो चुकी थी। मुझे अंदाजा नहीं था कि इतनी भारी संख्या में महिलाएँ भी आएंगी। मैंने आग्रह किया कि बाँस की ऐसी घेराबंदी हो कि महिला और पुरुष अलग-अलग पंक्तिबद्ध हो जाएं, तो ठीक रहेगा। आनन-फानन बाँस काटकर उन्हें बाँस के पत्तों से ढककर पार्टीशन तैयार कर दिया गया। हमारे देखते-देखते महिला और पुरुष कतारबद्ध खड़े हो गये।

अब मैं बैलेट बॉक्स की ओर मुड़ा। मेरे सहयोगी अनुभवी थे, सो एजेंटों की देखरेख में वह भी तैयार होकर व्यवस्थित हो गया। इन व्यवस्थाओं के बीच कब सात बजे पता ही नहीं चला। हमारे एक सहयोगी ने बताया मैं कहा – "आप चिंतित थे ना। देखिये पहला वोट ठीक सात बजे पड़ेगा।"

पहले एजेंटों ने वोट डाला। फिर कतार सरकने लगी। बाहर मेले का माहौल था। मैं अंदर-बाहर दोनों तरफ के कार्यों को 'प्रिसाइडिंग डायरी' के निर्देशानुसार नियंत्रण कर रहा था। बाहर एक तरफ महिलाएँ अपने बच्चों को साथ लिये कतार में खड़ी थीं। दूसरी तरफ पुरुष दुनिया-जहान की बातें करते खड़े थे, जिसमें आज का चुनाव प्रमुख था। एक उत्सुकता और जिज्ञासा थी कि आगे क्या होगा। उधर असम बटालियन के जवान इस क्षेत्र की पूरी तरह घेराबंदी किये घूम रहे थे।

महात्मा गांधी का यह स्वप्न कि भारत का हर भौगोलिक क्षेत्र से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े, इसलिए उन्होंने पंचायत-राज की परिकल्पना की थी। उसी का फल है यह पंचायत चुनाव। स्थानीय लोगों के गजब के उत्साह को देखते हुए यह कहना कठिन नहीं था कि लोग भले ही अशिक्षित हों, बेवकूफ नहीं हैं। इनलोगों में से अधिकांश को देख ऐसा लग रहा था मानो ये पहली बार मतदान कर रहे हों। उन्हें ठीक से मुहर पकड़ कर मतपत्र पर मुहर लगाना भी नहीं आता था। जबकि इसका प्रशिक्षण देने का काम चुनाव-प्रचारकों का होता है। मगर इस वक्त यह काम हमारे सहयोगी सैनिक सहृदयतापूर्वक कर रहे थे। वह उन्हें बताते कि कैसे मुहर पकड़ना है और कि कैसे मनवांछित निशान पर मुहर लगानी है।

बाहर लकड़ी के चुल्हे पर बड़े देगची में पानी उबल रहा था। भाईजी, चीनी डालकर लाल चाय तैयार कर उन्हें बिना छाने ही बाँस के चोंगों में भरकर मतदाताओं को सर्व किया जा रहा था। हमें भी बाँस के चोंगों में चाय मिली। यह दौर कई बार चला। उधर विद्यालय के विशाल रेत मैदान में फुटबॉल का गेम युवा गण खेल रहे थे। इससे

Scanned by CamScanner

अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं था कि राव कुछ ठीकठाक चलेगा। लोग भी यहाँ-वहाँ झुण्ड में बैठे सिगरेटों में मशगूल थे। पहाड़ों से उतरकर लोग मतदान केन्द्रों की तरफ चले आ रहे थे।

कतारों में खड़े लोगों को देखने भर से ही उनकी निर्धनता का अंदाजा लग जाता था। अधिकांश के पैरों में चप्पल नहीं थे। पहनावा भी ढंग का नहीं। बोलचाल से साफ पता चलता था कि उन्हें रियांग भाषा को छोड़ अन्य कोई भाषा नहीं आती। उनकी दुनिया स्वयं तक सीमित है। पहाड़ की तलहटी में बसे गांव में ये कभी-कभार बाजार करने जाते होंगे। जिला मुख्यालय हैलाकांदी अथवा शिलघर शायद कभी गए हों या नहीं, पता नहीं। हाँ एक बात साफ है कि भले ही यह निर्धन हों, दीन नहीं थे। यह अपनी छोटी सी अभावग्रस्त जीवन में भी संतुष्ट थे। बस उन्हें चाहिए था अपने घर में पीने का साफ पानी, बिजली, बच्चों के लिए विद्यालय और आवागमन के लिए सही रास्ते। ताकि ये भी दुनिया के साथ सही तालमेल बिठा सकें।

लोग खड़े हैं कतारबद्ध। चुनाव चल रहा है। हमारे साथियों को दम मारने की फुरसत नहीं है। ये चाह कर भी उठ नहीं पा रहे। खाने के नाम पर कुछ बिस्कुट और चौंगे में चाय मिली है। एक बजने वाला है। फिर भी कतार लंबी है। स्थानीय लोग भोजन लेकर हाजिर हैं। उनका मनुहार – 'खाना खा लेते तो ठीक था।'

मेरे एक सहयोगी अनुरोध करते हैं – "आधे घंटे के लिए निष्पक्ष-चुनाव मतदान रोक दें।" "प्रिसाइडिंग ऑफिसर की डायरी" में लिखा भी है। कुछ खाने की इच्छा नहीं। मगर बैठे-बैठे देह अकड़ गया है। हम अपना शरीर जरा सीधा कर लें।"

कुछ अन्य लोग भी इससे सहमत हैं। मगर बाहर प्रतीक्षारत लोगों को क्या कहें। ये भी तो धूप में घंटों खड़े हैं। उन्हें अपनी बारी का इंतजार है, उत्सुकता और जिज्ञासा है कि वे देखें कि मतदान क्या और कैसे होता है। उनके इस नागरिक अधिकार की पूर्ति का यही तो एक मौका है। कैसे मतदान रोक दें और खाना खाएँ हमलोग। बाहर लगी लंबी लाईन को कैसे नजरअंदाज कर दें। इन्हें फिर इसका मौका कब मिले, पता नहीं।

"थोड़ा धैर्य रखिये" मैं कहता हूँ– "आप अपना काम मुझे दें और दस मिनट में भोजन के बहाने शरीर सीधा कर लें।"

मेरे सहयोगियों को भी यहाँ की परिस्थिति की गंभीरता का अहसास है कि हम एक उग्रवाद पीड़ित क्षेत्र में हैं, सो कोई तर्क-वितर्क नहीं करते। यह जानते हैं कि अभी जो ठीकठाक चल रहा है, यह एक जरा सी गड़बड़ी या अव्यवस्था से भयानक रूप ले सकता है। एक जरा सी चूक हुई नहीं कि हमें जान के लाले पड़ सकते हैं। क्योंकि ये तथाकथित सीधे-सादे पहाड़ी लोग जब हिंसक होते हैं, तो उन्हें सम्हालना काफी कठिन हो जाता है। आखिर

Gram - Gupta
☎ (06274) 222050 (S)
GUPTA TEXTILES
Wholesale Cloth Merchant
Behind Bohra Market
Marwari Bazar, Samastipur - 848 101
(Bihar)
Prop : Indradeo Gupta
3/16

Scanned by CamScanner

हमें अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था इसलिए तो दिया गया है। ये लोग भी हमारे काम में भी सहयोग कर रहे हैं। मेरे सहयोगी शीघ्रतापूर्वक भोजन कर वापस आ जाते हैं। मैं एक-एक कर सभी सहयोगियों को भोजन करने हेतु भेजता हूँ। ये खड़े-खड़े ही भोजन कर शीघ्रतापूर्वक वापस आ जाते हैं।

"सर, आप भी भोजन कर लीजिए" एक रियांग युवक का मनुहार – "आप भी थके हैं बहुत।"

मैं उसके अनुरोध पर प्लेट पकड़ता हूँ। भोजन में वही कल वाली सामग्री। बस आज मछली की जगह चिकन है और आलू गोभी की सब्जी है। मैं भी जल्दी-जल्दी खाना उदरस्थ कर वापस लौटता हूँ।

दो ढाई बज रहे हैं। भीड़ कम होती हुई खत्म होने को है। अब पैकिंग की बारी है। लेकिन मुझे तो नियमानुसार तीन बजे के बाद ही पैकिंग करना है।

मेरे सहयोगी स्थानीय चुनाव एजेंटों की देखरेख में मत-पेटी को बंद कर सील-मुहर लगाते हैं। यह भी एक काफी मुश्किल और संवेदनशील कार्य है। सुरक्षाकर्मी कह रहे हैं – "लौटना है तुरंत। आप लोग भी तैयार हो जाएं।"

अब सुरक्षाकर्मियों के घेरेबंदी में मतदान पेटी है।

पोर्टर आ चुका है। सामान बाँधे जा चुके हैं। सभी के पैर वापसी के लिए बेचैन हैं। जैसे हमारे पीछे कोई आदमखोर शेर लगा हो। सभी वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र निकलना चाहते हैं।।

हमारा कारवां वापसी के लिए चल पड़ता है। सभी को धन्यवाद कहकर हम भी उसके साथ चल पड़ते हैं। एक गहरी नजर उस प्राथमिक विद्यालय पर डालते हैं, जहाँ किसी अनहोनी की आशंका के बीच हमने दम साधे आठ घंटे समय बिताया है।

वापसी चार बजे शुरु हुई। पुनः जंगल-पहाड़ों के बीच गुजरते, चढ़ने-उतरने का काम शुरु हुआ है। पाँच बजे तक दिन के उजाले में जितना रास्ता तय कर लिया जाए, उतना बेहतर। फिर बाद में अंधेरे में गति ६ मीमी होगी और खतरा भी बढ़ेगा। ये खतरे कई प्रकार के हो सकते हैं, अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं था। सो सभी शीघ्रतापूर्वक चल रहे थे।

अंधेरा बढ़ने के साथ हमारे सहयोगी सुरक्षा कर्मियों के टॉर्च चमकने लगे थे। वे हमें रास्ता दिखाते आगे बढ़ रहे हैं। नाला और नदी पार हुए। जंगल और पहाड़ का रास्ता खत्म हुआ। अब हम रामनाथपुर की धूल भरी पगडंडियों पर चल रहे थे।

यहाँ के बस स्टैण्ड पर सरकारी गाड़ी लगी थी, जिसमें हमें सवार होना था। मतदान सामग्री और अपने सामान को वहाँ बस में रखकर हमें थोड़ी मुक्ति का अहसास हुआ। अब सब-इंस्पेक्टर अपनी सेवाओं के बदले एक कागजात पर अपनी मुक्ति हेतु मेरा हस्ताक्षर ले रहा था।

रामनाथपुर में बिजली नहीं है। मगर यहाँ भी दूसरे भारतीय कस्बे के समान जेनरेटर के भाड़े के बल्ब जल रहे हैं। अब तो कुछ ढंग का खा लें। मगर यहाँ के होटलों में कुछ हो, तब तो खाएँ। आज चुनाव का दिन है। सो होटलों के आलमारियों में खाने की सामग्री खत्म है। चलो, जो भी बचा है, वही खा लें। स्वाद यहाँ देखता कौन है। मगर जो है, वह देने में दूकानदार इन्कार करता है, क्योंकि ये खराब है, खाने योग्य नहीं है। मन मारकर बिस्कुट के पैकेट से काम चलाना होता है। धीरे-धीरे दूसरे मतदान केन्द्रों में गये मतदान अधिकारी भी पहुँच गये हैं। नौ बजे रात में बस घरघराने लगती है। ग्यारह बजे रात तक हैलाकांदी पहुँच जाएँगे। इस बस के आगे-पीछे पुलिस का दस्ता है।

वहाँ पहुँचते ही मतदान पेटी और अन्य सामग्री जमा करते एक बज चुके हैं। खाने का लंगर खुला है। मगर एक तो ऐसे ही भूख मर चुकी। फिर वहाँ ढंग का भोजन भी तो हो। बस यही एक संतोष कि मतदान पेटी जमा हो गया। उसे जमा करते वक्त मेरे सहयोगी के पास एक सवाल उछलता है – "प्रिसाइडिंग ऑफिसर की डायरी कहाँ है।"

"यह यह है जनाब" मैं तपाक से कहता हूँ।

चितरंजन भारती
फ्लै. नं. बी-152, एचपीसी न्यू टाउनशिप
पो.-पंचग्राम, असम – 788802

Scanned by CamScanner

प्रभू स्वीकार है हमको तर्ज बहारों फूल बरसाओ

हमे जो भी दिया तूने, प्रभू स्वीकार है हमको.....
खिलाये फूल या कांटे नहीं इंकार है हमको .....
कभी मन टूट भी जाये तो ऐसा प्यार देना तुम
गिरे जो आंख से आंसू तो बढ़कर थाम लेना तुम
दुखों के इस भंवर से तुझको करना पार है हमको....
मिले जीवन में सुख या दुख तेरी रहमत ही मानेंगे
कभी भटका जो मन मेरा तो तेरी याद कर लेंगे
इसी दुख से मिला इक ज्ञान का आधार है हमको....
इस सूने दिल में भक्ति का भरो ऐसा उजाला तुम
जगत का सुख हलाहल है और हो अमृत का प्याला तुम
सितम देता रहा अब तक बहुत संसार है हमको.....
पहन लूं आंखों में गिरधर तुम्हारे नाम का काजल
गले में ज्ञान की माला पैरों में प्रेम की पायल
गुरु भक्ति ही जीवन का बने श्रृंगार है हमको
प्रभू स्वीकार है हमको
खिलाये फूल या कांटे नहीं इंकार है हमको
प्रभू स्वीकार है हमको।

सुभद्रा गुप्ता बरनवाल
मोती सोप, झरिया

अभिनन्दन तेरा अभिनन्दन

अभिनन्दन का कर अभिनन्दन, गर्वित पूरा देश है
यह तो झलकी थी भारत की, समर हुआ नहीं शेष है
औकात बता दी पाक को हमने, बिना शर्त रिहाई से
पूरे विश्व में पड़े अकेले, अब कितनी रुसवाई है ?
अरे विषधरों अब तो चेतो, सारा जग अब जान गया
आतंकी को पाल रहे हो, सब तुमको पहचान गया
करते रहे बचाव सदा ही, हाफिज और मसूद को
धिक्कार तुम्हें है अरे क्रिकेटर, पाले जो मसूद को।
कितने प्रमाण हम तुमको सौंपे, नीयत तेरी साफ नहीं
अपनी जनता जाग गयी है, और करेंगे माफ नहीं
कथनी और करनी पर तेरी, अब विश्वास करेगा कौन ?
उबल रहा है खून हमारा, अब न बैठेंगे हम मौन।
शौर्य हमारे अभिनन्दन का, सारे जग ने देख लिया
घुटनों के बल आज खड़े हो, डरकर माथा टेक दिया
हमें गर्व है इस सपूत पर, "एफ सिक्सटीन" को चूर किया
सभी लड़ाके तेरे भागे, ऐसा कुछ मजबूर किया
शर्म नहीं तुम सबको थोड़ी, "प्रोक्सीवार" चलाते हो
छुपकर के करते हो हमले, सामने क्यों नहीं आते हो ?
याद करो सन पैंसठ को तुम, इकहत्तर को याद करो
पुनः बना लेंगे हम बन्दी, फिर चाहे फरियाद करो।

मोहन प्रसाद बरनवाल
उखरा–वर्द्धमान

09002726608
08348697971

AJIT KUMAR BURNWAL

NEW ALANKAR JEWELLERS
PUCCA BAZAR, ASANSOL - 1
(OPP. HEAD POST OFFICE)
PHONE : 0341 -2309248

JEWEL GARDEN
88, G. T. ROAD
OPP. BAZAR, KOLKATA, ASANSOL - 1
PHONE - 0341 - 2221494
8/19

A House of Exclusive 22 Carat Halmark Showroom

Scanned by CamScanner

वैवाहिक विज्ञापन के पात्र सम्बन्धी सूचना का अभिभावकगण अपने स्तर से पूरी तरह जांच कर संतुष्ट हो लें – सम्पादक

11/19 **वधू चाहिए**

मनीष कुमार, DOB 1989, 5'10", B.Tech. BPCL में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9973059257

6/19 **वधू चाहिए**

शोभित प्रिय, 32, 5' 7", मांगलिक, स्मार्ट एवं आकर्षक सी.ए. फाइनल में तथा अपना निजी प्रेक्टिस हेतु मंगली, सुन्दर, सुयोग्य एवं शिक्षित वधू चाहिए। पिता श्री विजेन्द्र कुमार, माधोपुर, शोर कोठी, मुँगेर से फोटो बायोडाटा एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें। मो. : 7007823317 मुँगेर, 7905335030 (लखनऊ)

1/20 **वधू चाहिए**

Mukesh Burnwal, S/o Jay Prakash Burnwal, 27, 5' 9", fair, Chartered Accountant presently working as Asstt. Manager (Finance) in Eastern Coalfield Ltd. (ECL), of Kajora Bazar, Durgapur (W.B.), Contact No. : 9932363264

8/19 **वधू चाहिए**

कुणाल किशोर, 31, 5' 11", गोरा, स्मार्ट, B.Tech. (Electronics) IIT खड़गपुर, बंगलोर में In-Mobi कं में उच्च पद पर कार्यरत, आकर्षक वेतन हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर एवं कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता युगल किशोर, अपर आयुक्त (सेवानिवृत), झारखण्ड सरकार, राँची। मो. : 7461999661, 7461999665

10/19 **वधू चाहिए**

कुणालदीप, 29, 5' 4", स्मार्ट, आकर्षक, SBI नागपुर में Deputy Manager हेतु सुन्दर एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता श्रवण कुमार बरनवाल, गोल्डेन अलंकार, अम्बिका मार्केट, बड़ा बाजार, देवघर (झारखण्ड), मो. : 9431369172, 9199735007, E-mail : sk30dec@gmail.com

6/19 **वधू चाहिए**

अभिषेक कुमार, 28, 5' 7", स्मार्ट, सुन्दर, B.Tech. IIT गुवाहाटी से सीनीयर साफ्टवेयर इंजीनियर डायरेक्ट आई कं. में बहुत बड़े पैकेज एवं नीजी फ्लैट (3 BHK), बंगलोर में कार्यरत सुन्दर, प्रोफेशनल / घरेलू वधू चाहिए। फोटो एवं बायोडाटा के साथ संपर्क करें : श्री अरुण कुमार बरनवाल, स्टेशन रोड, बाटा मोड़, गया। मो. 9504762251, 9110101188

6/19 **वधू चाहिए**

बीपीन कुमार, 5'8", जनवरी 1988, सीयील कोर्ट खगड़िया (बिहार) में Admin. Officer cum कोर्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता नरेश बरनवाल, वारिसालीगंज (नवादा), मो. : 9060217521, 7870808849

7/19 **वधू चाहिए**

VIPIN ADHIR, 30, 5' 11", स्मार्ट, B.Tech, वर्तमान में Sr. Software Engr. Amazon, Bangalore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5'4") प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : सत्यनारायण वर्णवाल, धनबाद, (झारखण्ड), मो. : 9973662744, 8409560401, 9431509455

Scanned by CamScanner

10/19

वधू चाहिए

मनोज कु. बर्णवाल, 30, 5' 10'', गोरा, स्मार्ट, M C A, E Y. बंगलुरु में सॉफ्टवेयर इंजीनियर, T L के पोस्ट पर कार्यरत के लिए सुन्दर, सुशील एवं योग्य वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता दी जायेगी। संपर्क करे : राजेन्द्र प्र. बर्णवाल, दुर्गापुर (WB) मो. : 9232091149, 8436191005

7/19

वधू चाहिए

अमितेन्द्र बर्णवाल, 30, 5'10'', फयेर एवं स्मार्ट, असिस्टेन्ट पेशकार, झारखण्ड कोर्ट में कार्यरत हेतु फेयर, ब्यूटीफुल एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करे : पिता राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, मुँगेर। मो. : 9016730875, 9835257981

7/19

वधू चाहिए

सुजीत कुमार, 30, 5' 8'', गुड्स गार्ड उत्तर मध्य रेलवे (इलाहाबाद) हेतु गोरी, सिम्पल, गृहणी, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करे : कृष्ण कु. बर्णवाल, सुजीत मेडिकल हॉल, खन्दक मोड़, बिहरशरीफ (नालन्दा), मो. : 9835616731, 8651613442

7/19

वधू चाहिए

Sujit Kumar, 32, 5' 9", fair complexion, Smart, Doctor in PMCH, Patna requires preferrable Gov. working bride / professionaly quallfied suitably matched bride. Contact : Santosh Kumar, Mob. : 6205810646, Rishu Kumar, Mob. :9570567167

6/19

वधू चाहिए

मयंक कुमार, 29, 5' 10'', स्मार्ट, CS+ CA (Inter), American International Group, गुड़गाँव में पदस्थापित हेतु सुयोग्य एवं सुन्दर (कम से कम 5' 3''), कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता मनोहर बर्णवाल, अरुण मेडिकल, फुसरो (बोकारो), मो. : 9886853216, 9031951645

6/19

वधू चाहिए

रविशंकर कुमार, 30, 5' 11'', B Tech., फेयर एवं स्मार्ट, स्टेशन मैनेजर के पद पर सेलम (Shelam) तमिलनाडु में कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील, गोरी, शिक्षित गृहणी, कम से कम 5' 3'' लम्बी वधू चाहिए। पिता झारखण्ड सरकार में कनीय अभियंता के पद पर कार्यरत एवं राँची में अपना घर। संपर्क करे : 9835230159, 7992336754

6/19

वधू चाहिए

शेखर प्रसाद साव बर्णवाल, 31, 5' 9'', MBA, Dy. Manager, INDUSIND Bank, Kolkata में कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करे : पिता त्रिभुवन प्रसाद साव बर्णवाल, बैरकपुर, कोलकाता, मो. : 9051454246, 9836270300

7/19

वधू चाहिए

धनन्द्रेश कुमार, 29, 5' 3'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech., Software Engr., पूणे में कार्यरत हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करे : पिता डॉ. उमेश प्रसाद, सोसड़ा (बिहार), मो. : 9934843652, 8802217898

6/19

वधू चाहिए

संजीव कुमार, 33, 5' 7'', गोरा, स्नातक, Business (Distributor) के लिये सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करे : पिता गोपाल प्रसाद बरनवाल, माड़वारी धर्मशाला के पास, झाझा (बिहार), मो. : 9006215265, 9334078314

6/19

वधू चाहिए

Rohit Barnwal, 5'11", 16/7/1991, B.Tech. (BIT Sindri), MBA (DU) working as Consultant in PWC (MNC) Gurgaon. Looking for fair, well educated, 5'2" or 5'3", vegetarian girl. Contact : Father Rajendra Prasad Baranwal, Dhanbad, Mob. : 9430354889

Scanned by CamScanner

8/19

वधू चाहिए

अभिषेक राज, 28, 5'8", रंग साफ, आकर्षक व्यक्तित्व, B Tech, पूणे में All States MNC में आकर्षक पैकेज पर कार्यरत, पूणे में अपना 3 BHK फ्लैट हेतु सुन्दर, सुशील एवं प्रोफेशनल वधू चाहिए। पिता जयराज गुप्ता, Retd. SAIL कर्मी, पीरा मोड़, बोकारो, मो. : 7004528033, 8809920415 एवं 9470569816 पर संपर्क करें।

7/19

वधू चाहिए

मयंक कु. बरनवाल, फेयर, 29, 6', Electl. Engineer, प्रबंधक हुन्डई शोरूम, मेट्रो दिल्ली में हेतु डीपी होल्डर, प्रोफेशनल, फेयर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता मनोज कुमार बरनवाल, पुराना बाजार, गोमो (धनबाद), मो. : 9308983951, 3934103661, 9523726580 (W.A.)

6/19

वधू चाहिए

कुमार मिलेना, DOB 1990, 6', B.Tech., कॉग्निजेन्ट में Sr. Software Engr., Hurwel, Banglore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5' 4") प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : मनोज कुमार बरनवाल, गया, मो. : 9934891201

7/19

वधू चाहिए

Ankur Baranwal, 32, 5' 9", divorced no child working in an IT company as Sr. UI / UX designer in Pune. Completed his post graduation from Symbiosis, well settled in Pune with handsome salary, S/o Rakesh Baranwal, Varanasi, UP, Mob. : 8960227465, 8327671102

7/19

वधू चाहिए

शुभम दीप, 28, 5' 9", गोरा, स्मार्ट, मेडिकल कं. में सेल्स आफिसर हेतु गोरी, सुन्दर, शिक्षित एवं गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता बिनोद कुमार (बैंक मैनेजर), गिरीडीह, मो. : 9123154895

6/19

वधू चाहिए

Anupam Baranwal, 30, 5' 7", B.Sc., MBA, Assistant Controller in Indian Air Force (Central Govt. Job), 7 Lac/annum, need bride well educated, well natured & beautiful (priority for teaching / nursing career and upresident) Contact father Rakesh Baranwal, 8736833382, 8004710865, Whatsapp 7398962208

6/19

वधू चाहिए

पंकज कुमार, 28, 5' 6", गोरा, स्मार्ट, M.Tech (Civil), IIT रुड़की, गया इन्जिनीयरिंग कॉलेज में प्रोफेसर, आकर्षक केरीयर हेतु शिक्षित, गृहकार्य दक्ष सुन्दर कन्या चाहिए। सम्पर्क करें : रामजी प्रसाद बरनवाल, सरवा (गया), मो. : 6202155466, 8651456471

9/19

वधू चाहिए

Akash Deep Kamal, 29, 5' 8", fair, smart, B Com, MBA (Kolkata) distributor, C&F Medicine Ayurved Brother in law CA looking for a suitable match. Contact father Manmohan Lal Gupta, Siliguri, 9434750286, Mr. Shashi Prakash Baranwal, Advocate, Siwan (maternal uncle), 8709981937

7/19

वधू चाहिए

Pankaj Kumar, DOB 3 Dec. 1990, 5' 11", Scientific Officer, Bhabha Atomic Research Centre, Govt. of India posted at Kolkata with Annual income of 15 lakh हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अशोक लाल, शाहगंज, महेन्द्रु, पटना–6, मो. : 9852891297, 8697584746

Scanned by CamScanner

7/19

वधू चाहिए

अमरदीप मोदी, श्री गणपत मोदी के पोते, 28, 5' 11'', स्मार्ट, B Tech., IIT Mumbai, आकर्षक वेतन के साथ गुडगाँव में एवरेस्ट ग्रुप (U S A आधारित क.) में निदेशक हेतु उच्च शिक्षित लम्बी, गोरी, सुन्दर और कामकाजी वधू चाहिए। सपर्क करे : पिता अजय कुमार, आईएएस, उपनिदेशक, सीएंडएजी, कोलकाता, मो. : 9433351451

6/19

वधू चाहिए

मिलिन्द उत्सव, 28, 5' 10'', B.Tech., YFRET Communication, में Principal Engr. के पद पर 20 लाख के पैकेज पर कार्यरत हेतु गोरी, सुशील, गृहकार्य दक्ष, (कार्यरत को वरीयता) वधू चाहिए। संपर्क करे : पिता उद्धव प्रसाद, मुख्य प्रबंधक, BCCL धनबाद, मो. : 9470596634, 9431375821

7/19

वधू चाहिए

रवि कुमार बरनवाल, 30, 5' 9'', स्मार्ट, स्लीम, NIT, M Tech., रेलवे में JE इंजीनियर के पद पर कार्यरत हेतु सरकारी, गृहकार्य दक्ष कम से कम 5' 4'' लम्बी वधू चाहिए। फोटो एवं बायोडाटा के साथ संपर्क करे : पिता सोहन लाल बरनवाल, मकतपुर, गिरीडीह (झारखण्ड), W.A. No. : 7360820074, 7549077259

11/19

वधू चाहिए

प्रवेश बरदान, 27, 5'6'', सुन्दर, स्मार्ट, गोरा, Min. of Rly. में Clerk के पद पर मुम्बई में कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील, गोरी, शिक्षित–गृहणी, कम से कम 5' 2'' लम्बी वधू चाहिए। सरकारी नौकरी वाले को प्राथमिकता। संपर्क करे : बड़े पापा बिनोद कुमार बर्णवाल, केशोपुर, जमालपुर (मुँगेर), मो. : 9204547417, 6204076564

7/19

वधू चाहिए

Vikash Kumr, 31, 5' 10", B Tech (NIT) MBA (IIM) Calcutta from Asansol posted as Relationship Manager, ICICI in institutional banking in Singapore till Aug 2019, needs well educated, mature, tall and good looking companion. Please contact Mr. Jaydev Pd Burnwal, Mob : 7076950276

7/19

वधू चाहिए

सुमित कुमार, 30, 5' 8'', गोरा, स्मार्ट, होटल मैनेजर अहमदाबाद में कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए। मांगलिक को प्राथमिकता। फोटो एवं कुण्डली के साथ संपर्क करे : पिता सुरेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, पो.+जिला : जमुई (बिहार), मो. : 8210158990

7/19

वर चाहिए

Alliance invited for Shivangi Kumari, DOB 14.8.1990, fair, beautiful, well educated, M.Com 1st class from DSE (DU) & UGC NET qualified, presently working as Junior Accounts officer at BSNL, Katihar. Looking for a suitable well educated groom preferrably Doctor, Engineer (ONGC, NTPC, NHPC, Rly) or employed as class 1 or 2 officer in Central Govt. Contact with Bio-data to Shambhunath Shah, Retd. Manager, PNB, Purnia, Mob. : 9810645493, 9650784327, 7667352552

6/19

वर चाहिए

Sristi Baranwal, 24, 5' 5'', फेयर, मांगलिक, PG (MU) कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करे : पिता वासुदेव प्रसाद, गया,मो० : 7870530546, 9279061937

6/19

वर चाहिए

Akansha Kumari, 5' 3", DOB 25.01.1995, B.Tech. working in Wipro, Kolkata fair, slim & smart, D/o Nandkishore Baranwal of Gidhur (Jamui), Contact : 9939092813, Priority service in Kolkata.

Scanned by CamScanner

6/19 **वर चाहिए**

ब्यूटी विशारद, 28.10.1994, 5' 5", फेयर, B.Tech. (KIIT, Odissa), वर्तमान में Accenture, बंगलोर में Software Engineer हेतु हाय प्रोफाइल वर चाहिए। संपर्क करें : पिता बिजय लाल बरनवाल, न्यू रजत ट्रेडर्स, गिरिडीह, मो. :8409339768, 8709672207

6/19 **वर चाहिए**

श्वेता भारती, 26, 4' 11", बी.एड, गोरी, सुन्दर, सुशील, शाकाहारी हेतु वर चाहिए। शाकाहारी एवं सरकारी विभाग में कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र कुमार बरनवाल, धनबाद। मो. : 8271318669, 9155379177

6/19 **वर चाहिए**

स्वाति बरनवाल, 5'4", 27, रंग साफ, Phd अध्ययनरत (BHU) के लिये योग्य वर चाहिए। सरकारी, अर्द्धसरकारी विभाग में कार्यरत एवं बिजनेसमेन परिवार संपर्क करें : पिता रमेश बरनवाल, वाराणसी, मो. : 8957968372, 9839364381

7/19 **वर चाहिए**

26 वर्षीया, 5'3", गौर वर्ण, स्नातक एवं NIOS से प्रशिक्षण प्राप्त, गृहकार्य दक्ष के लिए योग्य नौकरी पेशा या व्यवसायी वर चाहिए। संपर्क करें : कृष्णा प्रसाद बर्णवाल (पिता), बोधमन तालाब, जमुई। मो. : 8051220458, 7050191051

11/19 **वर चाहिए**

तनवी बरनवाल, 5'2½", 27, B.Tech., भेरी स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष, HDFC Life, मुम्बई कारपोरेट ऑफिस में Sr. Software Engr. के पद पर अच्छे वेतनमान पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : पिता राजीव कुमार, दलसिंगसराय (बिहार), मो. : 9431641924, 9334601356

6/19 **वर चाहिए**

डा. रचना भारती, DOB 27.07.1987, 5' 3", सुन्दर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष MPT (NEURO) IP university, Delhi में सिनीयर फिजियोथेरेपिस्ट के पद पर कार्यरत हेतु सुयोग्य व शिक्षित वर चाहिए। संपर्क करें : सुरेन्द्र प्रसाद, स्वस्तिक मेडिकल हॉल, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9158927766

11/19 **वर चाहिए**

नेहा कुमारी, 28, 5'4", Fair, Smart, Slim, B.Tech., MBA, working at Corporate Office of Narayana Hrudayalaya Hospital, Banglore looking for a suitable match. Contact Basant Pd. Baranwal (Father), Dhanbad, Mob.: 9934612119, 6203888309

बोझ

मेरे सामने ही एक बालिका अपने से अधिक वजन से बालक को उठाने का प्रयास कर रही है। मैंने उससे कहा, 'बेटी ! तुम इसे गोद में लेने की कोशिश कर रही हो ! क्या तुम्हें इसका बोझ नहीं लगेगा ?' बड़े ही भोलेपन से उस बालिका ने कहा, 'यह बोझ नहीं, मेरा भाई है।'

गांव के सरपंच ने वॉटर सप्लाई के अफसर से शिकायत की, 'हमारे गांव में कई दिनों से पानी नहीं आ रहा है, जिसकी वजह से गांव के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।'
अफसर, 'देखो सरपंच साहब, मैं आपकी बात बिल्कुल नहीं मान सकता कि आपके गांव में पानी नहीं आ रहा है।'
सरपंच, 'क्यों नहीं मान सकते ?'
अफसर, 'क्योंकि आपके गांव का दूध वाला मुझे रोज पानी मिला दूध देकर जाता है।'

Scanned by CamScanner

बरनवाल सेवा सदन न्यास, धनवाद

बरनवाल सेवा सदन, धनवाद के निर्माणार्थ सहयोग करें। सहयोग करने वाले का नाम वरन संकल्प में प्रकाशित किया जायेगा।

1. 10000/– या ऊपर का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम।
2. एक लाख रुपये का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम के साथ–साथ हॉल में तैलिय चित्र।
3. दो लाख पचास हजार रुपये का सहयोग देने वालों के नाम पर एक वातानुकूलित कमरा, हॉल में तैलिय चित्र व शीलापट्ट पर नाम।
4. दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक का सहयोग देने वाले समाज के भामाशाहों का नाम शीलापट्ट पर वरीयता क्रम से दी जायेगी।

सेवा सदन भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, समाज के सभी सम्मानित सदस्यों से सहयोग की अपील है। आप हमें सीधे हमारे एकाउंट में भी राशि जमा कर सहयोग कर सकते हैं। हमारा एकाउंट विवरण निम्नवत है–

बरनवाल_सेवा_सदन_न्यास

बैंक : यूको बैंक, हीरापुर ब्रांच

धनवाद

खाता सं. : 01910100935484

IFSC Code : UCBA0000191

इस संदर्भ में आप निम्नवत लोगों से भी संपर्क कर सकते हैं।

पी.एल. बरनवाल	**बालेश्वर प्रसाद**
अध्यक्ष	सचिव
मो. : 9431187661	मो. : 9431725382
7004188137	7717762093

Scanned by CamScanner

देश गौरव सुभाषचंद्र बोस

गतांक से आगे .....

विदेशों में प्रचार

नमक सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। 5 जनवरी 1933 को बम्बई जाते हुए सुभाष पकड़े गये उन्हें सिवनी कारागार में रखा गया। यहां जब उनका स्वास्थ्य बिगड़ा तब उन्हें प्रथम जबलपुर में और फिर मद्रास में रखा गया।

एक बार मद्रास के उच्च न्यायाधीश अब्बास अली कारागार निरीक्षणार्थ यहां आये। उन्होंने पूछा, "क्यों सुभाष बोस, मजे में तो हो ?"

सुभाष ने तपाक से जवाब दिया, "यहां आइये और मजा चखिये। केवल पूछने से क्या होगा ?"

सुभाष का स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया। सरकार ने उन्हें 'देश निकाला' दिया। उनके भाई उन्हें उपचार हेतु विएन्ना ले गये। जनता ने द्रव्यसाह्य भेजा। 6 मार्च 1933 को ये यूरोप पहुंचे। स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए ये यूरोप के अनेक देशों में घूमते रहे। रोमा रोला, प्रा. लेस्नी, डाक्टर बेनेस, डी वैलेरा, मुसोलिनी, हिटलर, आदि से मिलकर उन्होंने जागतिक परिस्थिति की चर्चा की। भारत के स्वातंत्र्य युद्ध में कौन-सा देश कितनी सहायता कर सकेगा, इसकी उन्होंने टोह ली। उन्होंने 'इण्डियन स्ट्रगल' नाम का ग्रंथ लिखा।

पिताजी के सख्त बीमार होने से, ये भारत लौटे। 4 दिसंबर 1933 को ये कलकत्ता पहुंचे। एक दिन पूर्व ही पिताजी की मृत्यु हो गई थी। 11 जनवरी 1934 को उन्होंने फिर से यूरोप के लिये प्रस्थान किया। उनकी पेट की बीमारी पर विएन्ना में उपचार किया गया।

1936 में जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में लखनऊ में होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने हेतु ये निकल पड़े।

19 अगस्त 1936 को जहाज से उतरते ही पुलिस ने उन्हें पकड़ा और येरवडा जेल में भेज दिया। वहां उनका पित्ताशय का विकार उभर आया। उनका गला सूजने और दर्द करने लगा। तब सरकार ने उन्हें दार्जिलिंग जिले में गिद्दापहाड़ नामक स्थान पर, शरदबाबू के बंगले में स्थानबद्ध किया।

कांग्रेस की अध्यक्षता

बंगाल में फजलुल हक का मंत्रिमण्डल बना। उसने 17 मार्च 1937 को सुभाष को मुक्त किया। देशभर में हर्ष की लहर दौड़ पड़ी। उन्हें कांग्रेस के अध्यक्ष पद की माला पहनाई गई। फरवरी 1938 में गुजरात में ताप्ती के तीर पर हरिपुरा अधिवेशन संपन्न हुआ। सुभाष जी ने शुद्ध हिन्दी में बहुत प्रेरणादायक भाषण दिया।

"इतिहास बताता है कि साम्राज्य निर्माण होते हैं, फैलते हैं और नष्ट होते हैं। अंग्रेजी साम्राज्य अब तीसरी स्थिति में है। उनके राज्य की समाप्ति हमारी एकता, दृढ़ता, पराक्रम तथा त्याग पर निर्भर है। स्वराज्य प्राप्ति के लिये हमें क्रान्तिकारी कदम उठाने होंगे।"

उन्होंने देशभर में दौरा किया और स्वातंत्र्य प्रेम की ज्योति प्रज्वलित की। सुभाष के उग्र विचार, स्वतंत्र कर्तृत्व और प्रभाव के कारण बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता उनसे ईर्ष्या करने लगे। गांधीजी, जवाहरलाल, वल्लभभाई, राजेन्द्र प्रसाद आदि उनके विरुद्ध हो गये। सुभाष बाबू अध्यक्ष पद के लिये फिर से खड़े हुए और पट्टाभि सीतारामय्या को हराकर कांग्रेस के अध्यक्ष बने। परन्तु ये बहुत बीमार हुए। अध्यक्ष के उच्चासन पर ये बैठ नहीं सके। उनका भाषण उनके भाई ने पढ़कर सुनाया।

जमदोबा में इलाज कराते हुए उन्होंने एक पत्र में लिखा – "त्रिपुरी का वायुमण्डल घिनौना था। उच्च स्तरीय अग्रगण्य नेता यदि इतने हीन, ईर्ष्यालु तथा कुटिल हैं, तब इनके हाथ में देश का भवितव्य क्या होगा ?"

1 अगस्त 1939 को कलकत्ता में कांग्रेस प्रमुखों की सभा हुई। उस सभा ने सुभाष को कांग्रेस से निकाल दिया।

Scanned by CamScanner

भीतर बाहर से युद्ध करेंगे

सुभाष ने तीव्र ही [illegible] का दल प्रारम्भ किया। वे सार्वजनिक सभाएँ निकालने लगे। देशभर में भ्रमण कर अपने तेजस्वी विचारों से वे युवकों को आकर्षित करने लगे। 3 सितम्बर 1939 को महासभा में हुई उनकी सभा में ढाई लाख जनता उपस्थित थी।

सुभाष ने कहा – "अंग्रेजों पर संकट आना हमारे लिये सुवर्णसंधान है। स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिये हमें हर प्रकार से प्रयत्नशील रहना चाहिये।

1940 की जनवरी में दिल्ली में अखिल भारतीय विद्यार्थी संगठन के विशाल अधिवेशन में उन्होंने कहा, "भूख, प्यास, उपवास, कष्ट, मृत्यु आदि का सामना करते हुए भी हमें अडिग रहना होगा। हम स्वराज्य लेकर ही दम लेंगे और इस हेतु भीतर बाहर से युद्ध करेंगे।"

इस क्रम में वे विभिन्न दलों के प्रमुख नेताओं से मिले। डाक्टर आंबेडकर, बैरिस्टर सावरकर आदि पुरुषों से वे मिले। डॉक्टर हेडगेवार उनके पुराने परिचित थे। उनका अनुशासनबद्ध-संगठन सुभाष को ज्ञात था। डॉक्टरजी से मिलने हेतु वे नागपुर आये। परन्तु डॉक्टरजी उस समय मृत्यु शय्या पर थे।

1 जुलाई 1940 को जनता को आवाहन करते हुए सुभाष बाबू ने कहा, "अंग्रेजों के पुतले गुलामी के निदर्शक हैं। उन्हें हम उखाड़ फेंकेंगे। कलकत्ता के हालवेल स्मारक की हम ईंट से ईंट बजा देंगे।"

शीघ्र ही उन्हें गिरफ्तार किया गया। अब तक वे दस बार जेल जा चुके थे। शासन की सैकड़ों अन्यायपूर्ण कृतियों के विरोध में उन्होंने उपोषण प्रारंभ किया। उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। फजलुल हक की प्रार्थना पर अंग्रेज सरकार ने उन्हें रुग्णवाहिका में डालकर उनके घर पहुंचा दिया। परन्तु चारों ओर पहरे बैठाकर उन्हें स्थानबद्ध किया।

सीमापार

सुभाष बाबू ने परदेश जाने की योजना बनाई। उन्होंने दाढ़ी-मूंछे बढ़ाई। पठान जैसे कपड़े सिलवाये। उद्‌मनाम के भेट पत्र भी उपवा लिये – "महंमद [illegible] सिआदीन, अकबरपुर।"

[illegible] की लाल सड़क से आरा [illegible] तेज पर एक तांगा कर आई और सियादीन को बैठा ले गई। तांगा पेशावर और वहां से गोमोह स्टेशन पर पहुंची। वहां से कालका मेल से सवार हुए। अगले दिन दिल्ली, वहां से पेशावर और वहां से फ्रंटियर मेलगाड़ी के साथ वे काबुल की ओर चले। मेलगाड़ी रहमत खान के घर रुकी। अपने साथी का मुकाबला करते हुए दोनों भारत की सीमा के बाहर पहुंचे। सुभाषबाबू ने मातृभूमि को प्रणाम किया और मुट्ठी भर खाक पर लगाते हुए कहा, "चलें भारत।"

सफर अति कठिन था। सुभाष बाबू मौनी के साथ कदम बढ़ा रहे थे। उनकी प्रसन्नता देख भगतराम चकित हुए। उनके मन में विचार आया – "पैदल, खच्चर पर या सामान ढोने वाले ट्रक पर बैठे, ये सफर कर रहे हैं। कहीं भी बैठते-सोते हैं। जो भी रूखी सूखी मिलती है, मजे से खाते हैं। कभी कोई शिकायत नहीं। कर्मयोगी महापुरुष है।"

26 जनवरी 1941 की दोपहर वे काबुल पहुंचे। दूसरे ही दिन से रशियन, जर्मन, इतालियन राजदूतों से सम्पर्क प्रस्थापित करने के प्रयास में वे लगे। यह सब गुप्त रीति से करना था। बार-बार अपनी पहचान बदलना पड़ता था। दोनों में दिन में कई बार इस प्रकार सम्भाषण होता था।

'रहमतखान, अब क्या होगा ?'

'बाबूजी, सब ठीक होगा।'

'कब ?'

फिर दोनों खूब हसते थे।

काबुल के दुकानदार उत्तमचंद मलहोत्रा ने दोनों की उत्तम व्यवस्था रखी। उन्होंने हर तरह की जोखिम उठाकर सुभाष को सहायता पहुंचाई।

तीनों ने खूब प्रयास किये। कभी निराशा के काले बादल छा जाते तो कभी आशा की किरणें दिखाई देती।

18 मार्च 1941 को ओर्लान्दो माझोता बनकर सुभाष बाबू काबुल से निकले। पाताकिस्तार, समरकंद तथा मास्को होते हुए वे बर्लिन पहुंचे।

Scanned by CamScanner

आजाद हिन्द फौज

जर्मनी के बड़े-बड़े अधिकारियों ने सुभाष को हर तरह से तौला, परखा। जापान, इटली तथा जर्मनी के प्रमुखों ने आपस में विचार विमर्श किया। सुभाषचंद्र को स्वतंत्र भारत के प्रवक्ता के रुप में तीनों ने मान्यता दी। बर्लिन में स्वतंत्र हिन्दुस्तान केन्द्र खुला।

यूरोप के अनेक देशों में रहनेवाले भारतीय नागरिक सुभाषचंद्र को तन मन धन से सहकार्य देने लगे।

हजारों युद्ध कैदियों ने आजाद हिन्द सेना में प्रवेश किया। उनके प्रशिक्षण केन्द्र चलने लगे। 'जय हिंद' का नारा बुलंद हुआ। 'जन गण मन' राष्ट्रगीत बना। भारतीय दूतावास पर व्याघ्रचित्रांकित तिरंगा झंडा लहराने लगा।

26 जनवरी 1942 को सैनिकों ने आजादी की शपथ ग्रहण की। अनेकों ने अपना अंगूठा चीरकर खून से हस्ताक्षर किये। सुभाषजी को तिलक लगाया। उस समय सुभाष ने कहा – 'आप लोग कल तक भारत के शत्रुओं का साथ दे रहे थे। आज आप भारत को स्वतंत्र करने हेतु सिद्ध है। यही सच्ची क्रान्ति है। यह बलिदान है। यह कभी विफल नहीं होगा। हम भारत को आजाद करके ही रहेंगे।''

रोम में भी आजाद हिन्द सेना की शाखा खुल गई। जापान में रासबिहारी बोस की प्रेरणा से उसी ढंग से प्रयत्न बड़े प्रमाण पर होने लगे।

27 फरवरी 1941 को सुभाष ने आजाद हिन्द रेडियो पर कहा ''प्रिय भारतीयों, मैं सुभाषचंद्र बोस बोल रहा हूं। गत एक वर्ष मैं संगठन कार्य में जुटा रहा। अब हम सिद्ध है। हम बाहर से आक्रमण करेंगे। आप लोग भारत में विप्लव मचाइये।

सिंगापुर की पराजय का अर्थ हैं, अंग्रेजी साम्राज्य का अस्त और भारत के स्वराज्य का उदय।

इस भाषण को सुनते ही भारत में सर्वत्र नवचैतन्य की लहर दौड़ पड़ी।

अद्‌भुत यात्रा

जापान की विजय हो रही थी। 7 दिसबर ४२ को अंग्रेजो को पर्ल हारबर छोड़ना पड़ा। 12 दिसबर ४२ अंग्रेजों के दो बड़े जहाज उध्वस्त हुए। 15 फरवरी 1942 को अंग्रेजों को सिंगापुर छोड़कर भागना पड़ा। रासबिहारी बोस तथा उनके सहयोगियों ने हजारों भारतीय सैनिको को आजाद हिन्द सेना में शामिल कर लिया। उन्होंने बार-बार सुभाषचंद्र को निमंत्रण भेजा। सुभाष ने अपने यूरोपीय सहयोगियों से विचार विनिमय करते हुए जापान जाना निश्चित किया।

यात्रा लम्बी थी। गुप्त रुप से करनी थी। न हवाई जहाज से जा सकते थे न समुद्री जहाज से न खुशकी मार्ग से। अत: पनडुब्बी से जाना निश्चित हुआ।

फरवरी 1943 को सुभाष बाबू पनडुब्बी में आरुढ़ हुए। यहां केवल 3 फुट लम्बी और 2 फुट चौड़ी जगह थी। खड़े तक नहीं रह सकते थे। चौबीसो घंटे इंजिन की घरघराहट चलती थी। डीजल तेल की गंध रात दिन नाक में घुसती थी। खाद्य पदार्थो में भी यही बू आती थी। ऊपर-नीचे चारो ओर पानी ही पानी। शत्रु की पनडुब्बियाँ, उनके लगाये स्फोटक तथा जाल, भीमकाय जलचर पशु, यंत्र का बिगड़ना आदि अनेक खतरों से भरी यह यात्रा थी।

अठ्ठासी दिनों के बाद 6 मई 1943 को यह वरुणी यात्रा साबांग बंदरगाह में समाप्त हुई। अब उन्होंने नया नाम धारण किया, 'मातसुदा'।

पूर्वदिशा में क्रांति प्रकाश

जमीन पर पैर रखते ही सुभाष जी की दौड़ धूप प्रारंभ हो गई। टोकियो, रंगून और सिंगापुर से उनके भाषण आजाद हिन्द रेडियो ने प्रसारित किये।

4 जुलाई 1943 को सिंगापुर में 'इंडियन इंडिपेन्डन्स लीग' की सभा हुई। उसमें पूर्व एशिया के दो हजार प्रतिनिधि उपस्थित थे। सुभाष ने रासबिहारी के चरण छुए। रासबिहारी ने उन्हें गले लगाया।

रासबिहारी ने कहा – ''आज से इंडिपेन्डन्स लीग का नया अध्याय प्रारंभ हो रहा है। लीग के सब सूत्र मैं सुभाष बाबू के हाथों सौंप रहा हूं।''

Scanned by CamScanner

रासबिहारी ने सुभाष को उच्चासन पर बैठाया। सालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूंज उठा। सुभाष ने सब को संबोधित किया – "शत्रु के शत्रु से मित्रता प्रस्थापित कर उसकी सहायता से अपने शत्रु को पछाड़ना सर्वमान्य राजनीतिक चाल है। तदनुसार जर्मनी, जापान, इटली आदि देश हमारे मित्र बने हैं। मैं हिन्दुस्तान का सेवक हूं, सैनिक हूं। मैं जीऊंगा मेरे देश के लिये और मरूंगा मेरे देश के लिये।"

आजाद हिन्द सेना के सम्मुख उन्होंने कहा – "आप सब मुक्ति योद्धा हैं। आपका दर्शन मेरे लिये बहुत अभिमानास्पद है। अब हमारा नारा रहेगा, 'चलो दिल्ली'। लाल किले के मैदान में हम विजय गीत गाते हुए संचलन करेंगे। तब तक हम चलते रहेंगे, जूझते रहेंगे, बढ़ते रहेंगे।

मैं तुम्हें केवल भूख, प्यास, कष्ट और मृत्यु दे सकता हूं। भारत की स्वतंत्रता हमारा जीवनध्येय है। उस हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये हम सिद्ध हैं।"

तेरह हजार सैनिक गरज उठे, "भारतवर्ष जिन्दाबाद।" "आजाद हिन्द जिन्दाबाद।"

युद्ध योजनाएँ बनीं

सुभाष बाबू ने जापानी सेनाधिकारियों तथा मंत्रियों को बहुत प्रभावित किया। जापान सब सहायता देने लगा।

9 जुलाई 1943 को सिंगापुर की जनता ने सुभाष बाबू का स्वागत किया। हजारों ने अपना नाम लिखवाया। हजारों ने धन समर्पण किया। सोने के अलंकारों के ढेर लग गये।

वे रंगून पहुंचे। एक लाख लोगों ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया। उन्हें अपार धन दिया। युद्ध कैदियों के अतिरिक्त अनेक नौजवान आजाद हिन्द सेना में भरती हुए। महिलाओं के लिये 'रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेन्ट' खोलनी पड़ी। युद्ध विद्या के प्रशिक्षण केन्द्र चलने लगे।

एक छावनी में पचास हजार सैनिकों ने गणवेषधारी सुभाष को मानवंदना दी। सुभाष ने सबसे प्रतिज्ञा पढ़वाई – "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि भारतवर्ष के स्वातंत्र्य युद्ध में मैं आखरी दम तक लडूंगा। मैं सदैव हिन्दुस्तान की सेवा करूंगा। मेरे अठतीस करोड़ भाई-बहनों की हित-रक्षणा ही मेरा परम कर्तव्य है।"

प्रत्यक्ष युद्ध की योजनाएँ बनीं। भारत में किस रास्ते से प्रवेश करना होगा, किस दिन, किस नगर में स्वराज्य का झंडा लहरेगा, इसकी पूरी समय सारिणी बनाई गई, नगाड़े बजने लगे। सेनाएं इम्फाल की ओर कूच करने लगीं। अण्डमान-निकोबार जीत कर वहां तिरंगा लहराने लगा, बरसों से संजोये हुए स्वप्नों को प्रत्यक्ष में उतारने का समय निकट आ गया।

परन्तु हाय ! इसी समय दैव ने पासा पलटा।

संकटों के पहाड़

मुसोलिनी की मृत्यु हुई। हिटलर का जादू समाप्त हुआ। इंगलैण्ड-अमेरिका तथा रूस की जीत होने लगी।

ब्रह्मदेश में धुआँधार वर्षा होने लगी। नदी-नालों में बाढ़ आ गई। रास्ते रुक गये। आगे बढ़ना तो क्या पीछे हटना भी कठिन हो गया। दो-दो दिन फांके पड़ने लगे। सैनिक बीमार पड़ने लगे।

23 जनवरी 1945 को सुभाष का अड़तालिसवां जन्मदिन आया। सुभाष की सुवर्णतुला की गई। वह धन आजाद हिन्द सेना को दिया गया। सुभाष का भाषण सुनकर श्रोता भाव गद्‌गद् हो गये। हमीद खान नाम का पंजाबी मुसलमान दौड़ते हुए उनके पास आया। उसने कहा – "मेरी लाखों की जायदाद आपके चरणों पर समर्पित है।" इस प्रकार के सैकड़ों हमीदखान जुटने लगे। परन्तु मुसीबतों के बड़े-बड़े पहाड़ भी उसी समय टूटने लगे।

रूस ने जापान पर आक्रमण किया। जापानी सेनाधिकारियों के आपसी मतभेद उग्रतर हुए। 24 अप्रैल 1945 को सुभाष ने रंगून छोड़ा। वे अन्य छावनियों में गये। ऊपर से बम बरस रहे थे। चारों ओर तोपें गरज रही थीं। हथगोले फेंके जा रहे थे।

Scanned by CamScanner

रास्ते पानी और कीचड़ से भरे थे। पेट में अन्न नहीं था। घंटों तक पैदल चल रहे थे। भींगे कपड़ों में ही सोना पड़ता था। पैरों में छाले पड़ गये थे। फिर भी सब की चिन्ता करते हुए, दूसरों को उत्साह देते हुए, हृदय में ध्येय की आग लिये नेताजी सुभाषचंद्र बोस आगे बढ़ रहे थे।

भयानक ज्वालाएँ

जापान पर एटम बम बरसे। जापान ने हथियार डाल दिये। कोई सहारा नहीं बचा। संकट बढ़ने लगे। सहयोगियों ने कहा, 'नेताजी, आप कहीं गुप्त स्थान पर चले जाइये तो किसी प्रकार संघर्ष चलाया जा सकेगा। नेताजी का मन नहीं कर रहा था। परन्तु सहयोगियों ने उन्हें मांचूरिया भेजने का निश्चित किया।

हबीबुर्रहमान को साथ लिये सुभाष छोटे से जापानी हवाई जहाज में बैठे। सायगांव, तुरेन होते हुए वे तैपेई तक पहुंचे। तैपेई के अड्डे से जब उनका जहाज उड़ा तब थोड़ी ही देर में टेढ़ा मेढ़ा होता हुआ वह जमीन पर गिरा। ज्वालाएँ भभक उठी। सुभाष बाहर कूद पड़े परन्तु कपड़ों ने आग पकड़ ली। गर्दन से कमर तक वे बुरी तरह से झुलस गये। उनका सिर टकरा गया था। उनके चेहरे पर खून की धाराएँ बह रही थीं।

उनके अन्तिम शब्द थे, "मैं अब बचूंगा नहीं। मैं भारत की आजादी के लिये आखरी दम तक लड़ा। भारत स्वतंत्र होगा – शीघ्र ही स्वतंत्र होगा।"

निकट के अस्पताल में उन पर बहुत उपचार किये गये। सब असफल रहे। 18 अगस्त 1945 की रात्रि में साढ़े आठ बजे उनके प्राण पखेरु उड़ गये। शौर्य, धैर्य, संगठन कौशल्य, प्रयत्नशीलता, त्याग तथा बलिदान का उच्च आदर्श उन्होंने दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। भारत माता के महान पुत्र देश गौरव नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अमर हो गये।

– संकलित

संत कबीर के दोहे

❖ कबीर गुरु के देश में, बसि जाने जो कोय।
कागा तो हंसा बने, जाति बरन कुल खोय।।

❖ कबीर संगत साधु की, जो करि जाने कोय।
सकल बिरछ चन्दन भये, बांस न चन्दन होय।।

❖ ऊंचे कुल कह जनमिया, करनी ऊंच न होय।
कनक कलश मद सो भरा, साधुन निन्दा सोय।।

❖ जीवन, जोबन, राज मद, अविचल रहे ना कोय।
जो दिन जाय सतसंग में, जीवन का फल सोय।।

❖ जा घर गुरु की भक्ति नहीं, संत नहीं मिहमान।
ता घर जम डेरा दिया, जीवत भये समान।।

❖ गिरिये परबत सिखर ते, परिये धरनि गंझार।
मूरख मित्र न किजिये, बूड़ो काली धार।।

❖ एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
कबीर संगत साधु की, कटै कोटि अपराध।।

❖ साधू संगत परिहरै, करै विषय को संग।
कूप खनी जल बावरे, त्याग दिया जल गंग।।

❖ चर्चा करु तब चौहटे, ज्ञान करो तब दोय।
ध्यान धरो तब एकिला, और न दूजा कोय।।

❖ संत सुरसरी गंग जल, आनि पखारो अंग।
मैले से निरमल भये, साधु जन के संग।।

❖ कबीर कलह अरु कल्पना, सतसंगति से जाय।
दुख बासो भागा फिरै, सुख में रहै समाय।।

❖ ज्ञानी को ज्ञानी मिलै, रस की लूटम लूट।
ज्ञानी अज्ञानी मिलै, होवै माथा कूट

❖ कबीर संगत साधु की, ज्यों गन्धी की बास।
जो कुछ गन्धी दे नहीं, तो भी बास सुबास।।

मोहन जी बरनवाल
बेलवरा रोड, बलिया

Scanned by CamScanner

हेल्दी रेसिपी

करेला मसाला सब्जी

सामग्री – करेला 3, बारीक कटा प्याज 1, कद्दूकस किया अदरक लहसून 2 चम्मच, बारीक कटा टमाटर 2, हल्दी 1 चम्मच, अमचूर पाउडर 1 चम्मच, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, धनिया पाउडर 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार, लाल मिर्च पाउडर स्वादानुसार।

विधि – करेले का छिलका हल्का–सा खुरच दें। बीज निकाल दें और छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें। करेले को धोकर कुकर में डालें। दो–तीन चम्मच पानी, हल्का–सा नमक और हल्दी छिड़कें और मिलाएं। कुकर को बंद करके एक सीटी लगाएं और गैस बंद कर दें। कुकर को नल के नीचे रखकर तुरत प्रेशर निकाल दें। दो चम्मच तेल को पैन में गर्म करें और उसमें प्याज, अदरक और लहसुन डालें। मध्यम आंच पर प्याज के सुनहरा होने तक भूनें। टमाटर, बचे हुए सारे मसाले, गुड़, नमक और लाल मिर्च पाउडर डालें। अच्छी तरह से मिलाएं। जब टमाटर हल्का–सा गल जाए तो पैन में उबले हुए करेले डालें। नमक और मसाले जांच लें। आंच धीमी करें और पैन को ढककर करेले को दस मिनट तक पकाएं। जब करेला अच्छी तरह से पक जाए तो गैस बंद कर दें। बारीक कटी धनिया पत्ती से गार्निश करें और रोटी के साथ गर्मागर्म पेश करें।

क्रीमी मैंगो कुल्फी

सामग्री – चिकन कीमा 200 ग्राम, बासमती चावल 1 1/2 कप, तेल 2 चम्मच, दालचीनी 1 टुकड़ा, बड़ी इलायची 1, लौंग 6, साबुत काली मिर्च 8, जीरा 1 चम्मच, बारीक कटा प्याज 1, नमक स्वादानुसार, अदरक लहसून पेस्ट 2 चम्मच, बारीक कटा टमाटर 2, लाल मिर्च पाउडर 1 चम्मच, कटी हुई मिर्च 2, बारीक कटी धनिया पत्ती 2 चम्मच, पुदीना पत्ती 15, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, भुना प्याज 1 कप, ऑलिव ऑयल आवश्यकतानुसार।

विधि – पैन में तेल गर्म करें और उसमें दालचीनी, बड़ी इलायची, हरी इलायची, लौंग, काली मिर्च और जीरा डालें और मसालों में खुशबू आने तक भूनें। इस बीच एक बड़े सॉसपैन में पानी उबालें। चावल को धोकर उस सॉसपैन में डालें। जब चावल पक जाए तो उसे पानी से निकालकर एक ओर रख लें। जब मसालों से खुशबू आने लगे तो पैन में कटा हुआ प्याज डालें और दो से तीन मिनट तक भूनें। अब चिकन कीमा को पैन में डालें और कीमा के सुनहरा होने तक भूनें। अदरक लहसुन पेस्ट को पैन में डालें और लहसुन की खुशबू जाने तक भूनें। अब पैन में टमाटर, लाल मिर्च पाउडर और नमक डालें। टमाटर के मुलायम होने तक पकाएं। अब पैन में हरी मिर्च, धनिया पत्ती और पुदीना पत्ती डालकर अच्छी तरह से मिलाएं और लगभग 30 सेकेंड तक पकाएं। थोड़ा–सा गरम मसाला पाउडर डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। नमक और एक चौथाई कप भूना हुआ प्याज डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। गैस ऑफ करें और आधार कीमा बड़ी–सी हांडी में डालकर फैलाएं। ऊपर से आधा पका चावल, कुछ पुदीना पत्ती, धनिया पत्ती, थोड़ा गरम मसाला पाउडर, एक चम्मच ऑलिव ऑयल, बचा हुआ कीमा, बचा हुआ चावल, बचा हुआ भुना प्याज, बची हुई पुदीना पत्ती, बची हुई धनिया पत्ती, बचा हुआ गरम मसाला पाउडर और ऑलिव ऑयल डालें। हांडी को अच्छी तरह से बंद करके धीमी आंच पर सात से आठ मिनट तक पकाएं। रायता के साथ सर्व करें।

Scanned by CamScanner

With best compliments from

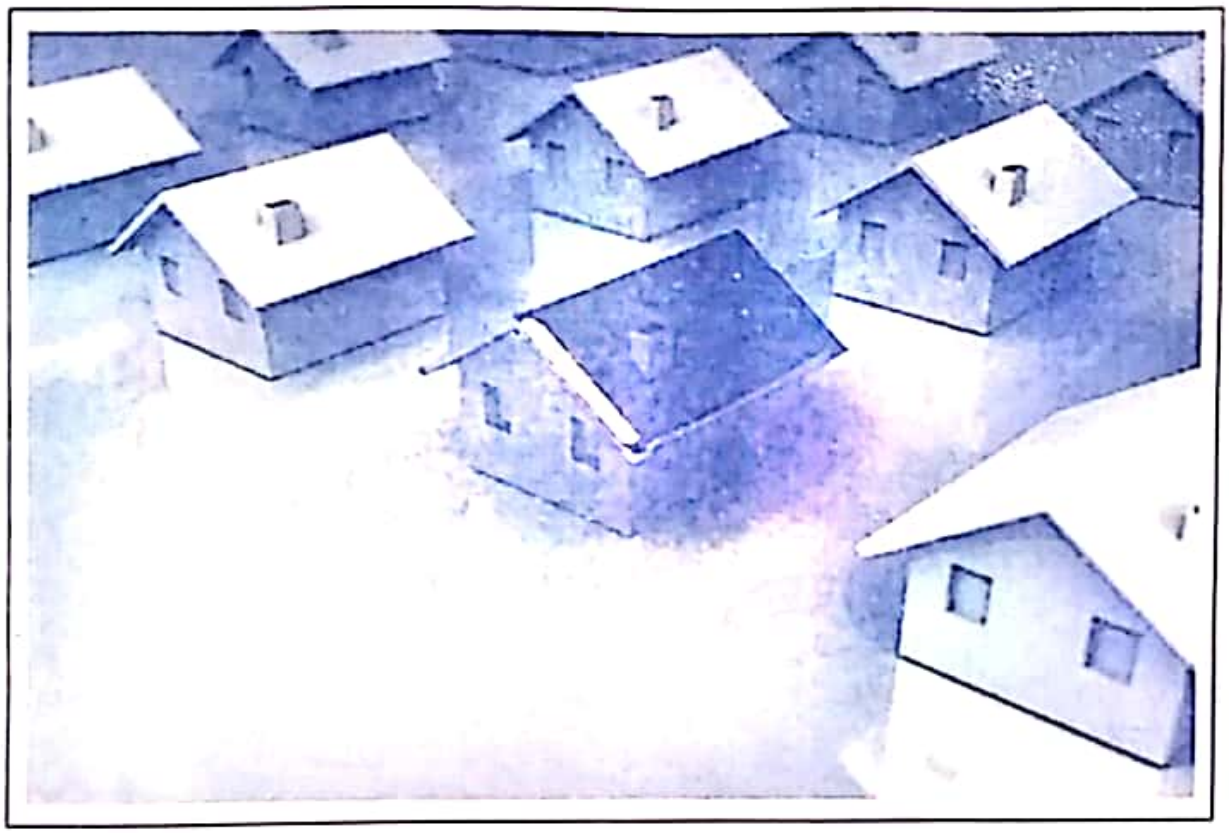

You fantasize we materialize...

Deepak Baranwal **Praveen Barnwal**

Golden Estate

Property Consultant & Finance Advisor

Flat No. 146. Pocket-1, Sector-19, Dwarka, New Delhi-110075
Tel: 011-28041188, 2804199 Mob.: 9810108174, 9810008139
Email: goldenpropmart@gmail.com

12/19

Scanned by CamScanner